ॐ श्री गणेशाय नमः

भविष्य निर्णय

द्विमासिक पत्रिका

(स्वास्थ्य, ज्योतिष, वास्तु, अध्यात्म, तंत्र-मंत्र चिंतन एवं बाल कहानी की द्विमासिक काल दर्शक)

वर्ष : 2 अंक : 3 फरवरी - मार्च 2012 मूल्य 15/-

संरक्षक
डा. चन्दन लाल पाराशर
डा. अशोक चतुर्वेदी
श्री महेश दत्त भारद्वाज
श्रीमती बिमला शर्मा

प्रधान सम्पादक
डा. महेश पारासर
फोन- 2525262, 2856666

सह-सम्पादक
डा.(श्रीमती) शोनू मेहरोत्रा
डा.(श्रीमती) रचना भारद्वाज
श्रीमती आयुषी पाराशर

वितरण प्रबन्धक
पवन मेहरोत्रा
डा. सतीश शर्मा

परामर्शदाता
डा. खेमचन्द्र शर्मा
डा. सतीश शर्मा
श्री महेश वर्मा
श्री जी. पी. एस. राघव

वित्त सलाहकार
श्री सतीश चन्द्र बंसल

आवरण सज्जा
ए. डी. ऑफसेट
आगरा फोन-9319053439

सदस्यता शुल्क
150/ दो वर्ष

ज्योतिः शास्त्रमनन्ताभ- स्कन्धत्रय समन्विवम् । सर्वलोकहितार्थाय, मुनिभिर्निर्मितं पुरा ।।
नमस्ते वास्तु देवाय, भू-शय्या शायिने प्रभो । कल्याणं कुरु मे नित्यं- सर्वथा सर्वदा विभो ।।
आचार्य चन्दन लाल पाराशर

क्या कहाँ

शंख बजाने से क्या लाभ?	डा. महेश पारासर	2
होली पर किये जाने वालें महत्वपूर्ण टोटके	डा. रचना भारद्वाज	4
''राज करने के प्रबल इच्छा करते है मेष लग्न वाले''	डा. शोनू मेहरोत्रा	5
वैवाहिक रस्में और उनका रहस्य	श्रीमती कविता बंसल	6
पृथ्वी माता का व्रत व पूजन	पं. व्रजकिशोर शर्मा ब्रजवासी	7
आइने का संभल कर प्रयोग करें	पं. दयानन्द शास्त्री	8
क्या प्रलय लेकर आयेगी 2012?	मोनिका गुप्ता	9
लक्ष्मी को स्थाई करने का पर्व अक्षय तृतीया	श्रीमती पूनम दत्ता	9
परीक्षा में सफलता के राशि सम्मत अचूक उपाय	श्री पवन कुमार मेहरोत्रा	10
कब होता प्रेम–विवाह	पं. अजय दत्ता	11
धर्म को धर्म की आँख से देखना चाहिए	श्री सुरेश अग्रवाल	11
होली पर जानें रंगो की भाषा	श्रीमती रेनू कपूर	12
मनोकामना पूर्ति हेतु मन्त्र	पं. विष्णु पाराशर	13
बडें बूढ़ो के शब्दो में छुपा ज्योतिष	श्रीमती नूतन	13
मासिक राशिफल	पुष्पित पारासर	14–15
हित–अहित	विजय शर्मा	16
पूजा – सामिग्री		23

इस पत्रिका का कोई भी अंश या भाग किसी भी रूप में प्रकाशक की अनुमति के बिना, किसी अन्य के द्वारा उपयोग किया जाना वर्जित है। लेखकों के विचारों से सम्पादक का सहमत होना अनिवार्य नहीं है। अतः लेखों के सम्बन्ध में उत्पन्न किसी भी प्रकार का विवाद हेतु पत्रिका परिवार उत्तरदायी नहीं होगा। इसके लिए मूल लेखक ही जिम्मेदार होगें। सम्पादक किसी भी लेख को बिना कारण सम्पादित/निरस्त किये जाने का अधिकार सुरक्षित रखते हैं। अप्रार्थित पांडुलिपियों की वापसी नहीं होगी। कॉपीराईट अधिकार भविष्य निर्णय में निहित रहेगा। हमारा न्यायालय क्षेत्राधिकार आगरा होगा।

स्वामी, प्रकाशक, मुद्रक व सम्पादक डा. महेश पारासर द्वारा Aydee Offset 42/140 एम, कृष्णा कुंज, हलवाई की बगीची, आगरा– से छपवाकर FF-6, भगवती कॉम्प्लैक्स, शाह टाकीज के सामने, एम. जी. रोड़, आगरा से प्रकाशित। **RNI No. UPHIN 41286/24/1/2010-TC**

''प्रधान संपादक की कलम से''

डा. महेश पारासर
ज्योतिष महामहोपाध्याय, वास्तुशास्त्राचार्य,
ज्योतिष भूषण, ज्योतिष अलंकार,
ज्योतिष भास्कर, वराहमिहिर पद से सम्मानित
प्रबन्धक, ज्योतिष तंत्र शिक्षा प्रसार समिति

शंख बजाने से क्या लाभ?

हिन्दूजन पूजा, आरती कथा वार्ता आदि धार्मिक अनुष्ठानों में शंख अवश्य फूंकते हैं इससे क्या लाभ? **(क)** शंख से सब राक्षस मारकर, **(ख)** शत्रुओं का हृदय दहलाने के लिए शंख फूंकने वाला व्यक्ति अपेक्षित है। **(ग)** पूजा के समय विशेषतः जो पुरुष शंख ध्वनि करता है उसके सब पाप नष्ट हो जाते हैं, और विष्णु भगवान् के साथ आनन्द करता है। श्री जगदीशचन्द्र बसु जैसे भारतीय वैज्ञानिकों ने अपने यन्त्रों द्वारा यह प्रत्यक्ष दिखा दिया है कि एकबार शंख फूंकने पर जहाँ तक उसकी ध्वनि जाती है वहाँ तक अनेक बीमारियों के कीटाणुओं के हृदय दहल जाते हैं, और वे मूर्च्छित हो जाते हैं। यदि निरन्तर यह क्रिया चालू रखी जाए तो फिर वहाँ का वायुमण्डल तादृश कीटाणुओं से सर्वथा उन्मुक्त हो जाता है।

यह सभी विज्ञानवेत्ता मानते हैं कि शब्द की प्रगति में सूर्य किरणें बाधक सिद्ध होती हैं। इसलिए हमारे यहाँ प्रातः सायं ही शंख बजाया जाता है, जिससे कि शंख घोष से पूरा लाभ उठाया जा सके। मूकता और हकलापन दूर करने के लिये निरन्तर शंख का शब्द श्रवण करा एक अचूक महौषधि है। निरंतर शंख बजानें वाले व्यक्ति को कभी फेफड़ों का रोग नहीं हो सकता। दमा, ऊरूक्षत, कास, सर्दी, प्लीहा, यकृत् और इन्फ्लूंजा जैसे रोगों के पूर्वरुप में शंखध्वनि लाभप्रद है। इसलिये देवमन्दिर, कथाभवन आदि स्थानों में जहां मनुष्यों का अधिक जमाव होता हो, और उनके मुख से निकलने वाले श्वास से वायुमण्डल दूषित होने का पर्याप्त अवसर हो ऐसे स्थानों में शंख बजाकर प्रथम ही वायुमण्डल को विशुद्ध बनाना बहुत लाभप्रद है।

शंख का जल क्यों छिड़का जाए?

अभी नीराजन आरती के प्रसंग में शंख में जल भरकर दर्शकों पर छिड़कने का उल्लेख किया गया है यहा क्यों? ब्रह्मवैवर्त पुराण में लिखा है कि–

जलेनापूर्य शंखे च तत्र संस्थापयेद् बुधः। पूजोपकरणं तेन, जलेन क्षालयेत्पुनः॥ (ब्र. वै. ब्रह्मखण्ड 26/97)

अर्थात्–शंख में जल भरकर देवस्थान में रखें, पुनः उससे समस्त पूजा सामग्री का प्रक्षालन करे।

'वस्तु वैचित्र्यवाद' के अनुसार शंखस्थ जल और वह भी विष्णु भगवान् की प्रतिमा के सामने उपहृत परम पवित्र माना गया है। अथर्ववेद में शंख को **मणि नाम** से स्मरण किया है और इसकी महिमा के वर्णन में पूरा एक सूक्त भरा है। पात्र के संयोग से अमुक वस्तु भी उसके गुणों से प्रभावित हो जाती है, यह प्रत्यक्ष देखा जाता है, जैसे पीतल के बर्तन में मट्ठा विकृत हो जाता है, कांसे प्रौर ताम्बे बर्तन में भी घृत आदि द्रव्य बिगड़ जाते हैं, इसी प्रकार अमुक पात्र में तत्तद् वस्तुयें तद्गुण–सम्पन्न हो जानी स्वाभाविक हैं। सो शंखस्थ पावक गुणों से अन्यान्य वस्तुओं और दर्शकों को भी लाभान्वित कैसे किया जाए–इसका सहज उपाय यही हो सकता है कि तत्संयुक्त जल में शंख के गुणों का आधान करके फिर उसे सर्वत्र वितरण किया जाए। इस क्रिया में यह भी समझ लेना आवश्यक है कि जल में डाले हुए द्रव्यों की विशेषता सौ गुणी हो जाती है। सो शंखस्थ जल के सेचन से संस्पृष्ट समस्त वस्तुजात विशुद्ध हो जाती है। सगर्भा स्त्री यदि शंखस्थ जल द्वारा स्नात शालिग्राम शिला का चरणामृत पान करे तो अन्यान्य लाभों के साथ उससे प्रसूत बालक कभी मूक नहीं हो सकता। रुक–रुककर बोलने वाले हकले व्यक्ति पर तो हमने शंख्जल पान का स्वयं प्रयोग करके देखा है। पाठक स्वयं भी अनुभव कर सकते हैं। धैर्य और नैरन्तर्य की आवश्यकता है, लाभ अवश्य होगा।

पाठकों के पत्र

श्रृदेय गुरुजी,
सादर नमस्कार

दिसम्बर–जनवरी का भविष्य निर्णय का अंक मिला। सभी लेख दिल को छू गये। सन् 2012 के ग्रह गोचरानुसार द्वादश राशियों का वार्षिक फल बहुत ही अच्छा लगा। मासिक राशिफल बहुत सटीक बैठता है। कृपया मासिक राशिफल थोड़ा विस्तृत करें।

श्रीमती मिथलेश परमार
नई दिल्ली

आदरणीय पारासर जी

आपकी द्विमासिक भविष्य निर्णय पुस्तक का दिसम्बर–जनवरी अंक बहुत अच्छा लगा। पत्रिका में श्रीमती रचना भारद्वाज जी का लेख शनि ग्रह का हमारे जीवन पर प्रभाव बहुत रोचक लगा। पत्रिका के उज्जवल भविष्य की कामना करता हूँ।

श्री सरोज अवस्थी
खुर्जा

अमृत वचन

ब्रह्मज्ञानी भोगों को भोगते हुए भी उनमें आसक्त नहीं होता। प्रारब्ध में यदि भोग हैं तो उन्हें त्यागना भी अंहकार है। वह स्वभाविक जीवन जीता है।

पता परिवर्तन की सूचना अवश्य दें

अक्सर भविष्य निर्णय द्वि-मासिक पत्रिका के सदस्य अपना भवन बदल लेते हैं, किन्तु पता परिवर्तन की सूचना नही देते जिसके कारण भविष्य निर्णय द्वि-मासिक पत्रिका पुराने पते पर ही भेजी जाती रहती है, किन्तु आपको नही मिलती। अतः पता परिवर्तन की सूचना कार्यालय पर फोन कर के दें। फोन न. 9719666777, (0562) 2856666, 2525262

आपके प्रश्नों के समाधान

प्रश्न– श्रीमान् जी मुझे व्यवसाय में लगातार नुकसान हो रहा है। काफी कर्ज में आ चुका हूँ जबकि बिक्री निरंतर हो रही हैं ?

उत्तर – पुखराज रत्न धारण करें। शनिस्त्रोक्त का रोजाना पाठ करें। पंक्षियों को दाना चुगायें। शनि यंत्र अपने पास रखें।

सुरेश कुमार शर्मा

प्रश्न– मेरा विवाह कब तक किस दिशा में होगा?

उत्तर – विवाह का समय 05 दिसम्बर 2012 से 08 अप्रैल 2013 तक हैं। आप मंगल यंत्र की पूजा, शनिस्त्रोक्त का पाठ, पंक्षियों को दाना चुगायें। पुखराज रत्न 5–6 रत्ती के लगभग धारण करें। आपका विवाह जन्म स्थान से दक्षिण या पश्चिम दिशा की ओर होने की उम्मीद है।

कु. राधिका अग्रवाल
डा.महेश पारासर

यदि आप ज्योतिष एवं वास्तु सम्बन्धित किसी भी समस्या के समाधन की उचित सलाह चाहते हैं। लिखें या ईमेल करें–

ज्योतिष परामर्श शुल्क रु. 500/- वास्तु परामर्श शुल्क रु. 1100/- (मकान का नक्सा आवश्यक)

परामर्श शुल्क ड्राफ्ट/ मनीआर्डर द्वारा निम्न पते पर भेज सकते हैं या महेश चन्द शर्मा के एस. बी. आई, एस. एन. एम. सी. शाखा, आगरा, खाता न. **10039621088**, में जमा करा दे।

भविष्य दर्शन®
ज्योतिष, वास्तु शिक्षण संस्थान

होली पर किए जाने वाले महत्वपूर्ण टोटके

डा. रचना के भारद्वाज
वास्तु शास्त्राचार्य, ज्योतिष प्रभाकर, अंक विशारद
नई दिल्ली
फोन- 09717195756, 09999234781

होली में अनेक प्रकार के टोटके किए जाने के कारण इस दिन लोग काफी सतर्क एवं सशंकित रहते हैं। होली पर्व पर रंग, गुलाल, पानी आदि शरीर पर डालकर आमोद–प्रमोद होने के कारण ऐसी स्थितियों में अभिमंत्रित वस्तुएँ शरीर पर डालना एवं छिड़कना आसान हो जाता है। अतः तांत्रिक दृष्टिकोण से अभिमंत्रित वस्तुएँ प्रयोग विधि के अनुसार दूसरे व्यक्ति पर डालकर उन्हें प्रभावित किया जा सकता है।

1. धन हानि के बचाव-यदि आपको बार–बार धनहानि का सामना करना पड़ रहा हो, तो द्विमूखी दीपक जलाकर मुख्य द्वार पर गुलाल छिड़क कर रख देना चाहिए। जब वह जलना बन्द हो जाए, तो उसे होली की अग्नि में डाल देना चाहिए। दीपक जलाते समय मन ही मन यह कामना करनी चाहिए कि आपको भविष्य में धनहानि का सामना नहीं करना पड़ेगा।

2. डूबे हुए धन की प्राप्ति-यदि आपका धन डूब रहा हो, अर्थात् किसी को दिया हुआ पैसा बापस नही मिल रहा हो, तो चौराहे पर होली के समीप जाकर भूमि पर अनार की लकड़ी से उस व्यक्ति का नाम लिखें, जिससे आपको धन मिलना हो। नाम लिखने के स्थान पर हरा गुलाल इस प्रकार छिड़क देना चाहिए जिससे कि नाम स्पष्ट दिखाई न दे।

3. राज्यकार्य में सफलता-यदि राज्यपक्ष से बाधाएँ आ रही हों, तो चौराहे पर होली के समीप जाकर होली की उल्टी सात फेरें करें तथा प्रत्येक चक्र पूर्ण होने पर आक का टुकड़ा होली में फेंक दें। इस प्रकार कुल मिलाकर सात आक की जड़ के टुकड़े होली में फेंक दें। यह प्रयोग उस समय करना चाहिए, जब होली में अग्नि प्रज्वलित नहीं हो, आक का टुकड़ा इस प्रकार फेंके कि वह होली में जाकर गिरे, होली से बाहर नहीं। ऐसा करने से राज्यपक्ष से चली आ रही बाधाएँ दूर होती हैं। यदि किसी विशेष राज्यधिकारी से परेशानी आ रही हो, तो आक के टुकड़ों पर गोरोचन द्वारा अनार की कलम से उसका नाम लिखकर होली में डालना चाहिए।

4. शनि दोष निवारण हेतु-यदि शनि ग्रह आपको पीड़ित कर रहा हो, तो लोहे का छल्ला बनवाकर होली की दो परिक्रमा करके उसमें डाल दें। होलिका दहन के पश्चात् दूसरे दिन जब होली की अग्नि की शांत हो जाए, तो उसकी राख में से उस छल्ले को निकालकर घर ले आएँ तथा छल्ले को स्वच्छ जल एवं कच्चे दूध से धोकर शनिवार के दिन सायंकाल दाहिने हाथ की मध्यमा अंगुली में धारण कर लें।

5. दुर्घटना से बचाव-दुर्घटना से बचाव के लिए होली की रात्रि में होलिका दहन से पूर्व हाथ में पाँच काली गुंजा लेकर होली की पाँच परिक्रमा लगाकर अन्त में होलिका की पाँच परिक्रमा लगाकर अन्त में होलिका की ओर पीठ करके पाँचो गुंजाओं को सिर के ऊपर उठाकर होली में फेंक देना चाहिए। इस प्रकार प्रयोग करने से दुर्घटनाओं से रक्षा होती है। जिन व्यक्तियों के साथ बार–बार अकस्मात् दुर्घटनाएँ हो रही हों, तो उन्हें यह प्रयोग अवश्य करना चाहिए।

6. कार्य सिद्धि हेतु-यदि आपके अनेक कार्य पूर्णता से पहले ही व्यवधान के कारण अधूरे पड़े हों, तो आपको होली की रात्रि में सात साबुत हल्दी, सात पीले पुष्प एक पीले वस्त्र में बांधकर जलती हुई होली की सात परिक्रमा करके अगले दिन कपड़े सहित समस्त सामग्री को बहते हुए जल में प्रवाहित कर देना चाहिए। वस्तुओं को प्रवाहित करने के उपरांत वहां पर उसी जल से स्नान करके वापस घर लौटना चाहिए। ऐसा करने से आपके अधूरे पड़े हुए कार्य शीघ्रता से पूर्णता की ओर अग्रसर होंगे।

शेष पेज 19 **पर**.....

Consult any problems: Health, Wealth, Marriage, Business, Education, Family Relations, Jobs,Enemies & Property
Remedies by Stones, Yantra, Mantra & Pooja
Horoscope, Match Making & Varshphal
Mon to Thu12 PM to 6 PM
भविष्य दर्शन®
Dr. Rachna K Bhardwaj
Consultant of Astrology & Vastu
East of Kailash, New Delhi - Ph. 09717195756
H.O.- Dr. Mahesh Parasar, Opp. Shah Cinema, Agra Ph. 0-0562-2525262,2850666

''राज करने के प्रबल इच्छा करते है मेष लग्न वाले''

डा. शोनू मेहरोत्रा
वास्तुमहर्षि, ज्योतिषप्रभाकर,
वास्तु प्रवक्ता (अखिल भारतीय-ज्योतिष संस्थान संघ)
9412257617, 9319124445

लग्न का व्यक्ति के जीवन में निर्णयकारी योगदान होता है। इसलिए इस अंक से क्रमदार हर लग्न के गुणो को प्रकाशित किया जायेगा। इस अंक में हम पहली लग्न मेष को विस्तार से समझते है।

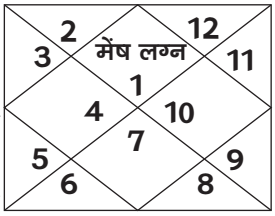

मेष राशि की गणना क्रूर राशि में होती है। यह राशि पूर्व दिशा की स्वामी हैं तथा पुरूष राशि का फल देती है। मेष राशि अग्नि तत्व की राशि हैं तथा पीठ की ओर से इसका उदय होता है इसलिए इसको पृष्ठोदय राशि कहते हैं। मेष लग्न वाले की आंखे गोल होती हैं उसके घुटने कमजोर होते है। इस लग्न के जातक को पानी से हमेशा सावधान रहना चाहिए, कभी पानी से खिलवाड़ नही करना चाहिए। इस लग्न में उत्पन्न हुआ जातक घूमने का बहुत शौकिन होता है। इस लग्न वाले का स्वामी मंगल होता है। यह लग्न मिलने का अर्थ होता है। कि आप पर हनुमान जी बहुत प्रसन्न हैं। इस लग्न वाले जातक के लिए लाल रंग बहुत शुभ होता है। जिन लोगों का जन्म इस लग्न में होता है उन पर हमेशा बजरंग बली की कृपा बनी रहती है।

मेष लग्न का व्यक्ति अंर्तमुखी होता है। इन्हें गुस्सा कम आता है। लेकिन जब इनको गुस्सा आता है। तो जल्दी उतरता नहीं है। इस लग्न के व्यक्तियों से भगवान सूर्य ओर देवगुरू बृहस्पति प्रसन्न रहते हैं। सूर्य को आत्मा, पिता के साथ–साथ संतान और मस्तिष्क का भी स्वामित्व प्राप्त होता है। अंतः मेष लग्न के व्यक्ति सदैव नियम और आलस्य रहित होकर काम करते है।

ऐसा जातक बहुत जिददी स्वाभाव का होता है अगर वह कोई काम करने की ठान ले तो उसे करके ही रहता है। बाहर से हो सकता है कि उसने ठाने हुए काम को करने का विचार छोड़ दिया है परन्तु भीतर ही भीतर वह अपने काम को करने का जुगाड़ करता रहता है।

इनमें बहुत धैर्य होता है। व कोई भी काम बहुत जल्दी में नहीं करते हैं। खरीददारी काफी सोच समझकर करते है। मेष लग्न के व्यक्ति धैर्य की बजह से हारी बाजी भी जीत सकते हैं। इनमें ऊर्जा की अधिकता होती है। लेकिन अगर कुंडली सूर्य गड़बडा जाय तो धैर्य और ऊर्जा में कमी हो जाती है। जब तक सूर्य अच्छा नहीं होती तब तक ऐसे जातकों की बुद्धि प्रखर नहीं होती क्योकि पंचम भाव अर्थात बुद्धि के घर का मालिक होता है। इस लग्न में कर्म और लाभ का स्वामी शनि गड़बड़ा जाय तो कर्म और लाभ में तो कमी करेगा ही साथ ही जातक की समझदारी भी कम कर देगा। इस लग्न का जातक बड़ा उद्यमी पराक्रमी और साहसी होता है उसकी अपनी एक स्वछंद विचारधारा होती है। मेष लग्न के अन्दर एक खास बात यह होती है। कि वह भूलता बहुत कम है। अगर उसका किसी से झगड़ा हो जाए तो वह उसे याद रखता है मौका मिलने पर उससे बदला जरूर लेता है। पंचम भाव सिंह राशि होने के कारण वहां का स्वामी सूर्य ग्रह होता है। इसीलिए ऐसे लोगों में मानसिक रूप से राज करने की प्रबल इच्छा होती है। वह अपनी जुवान खाली हो जाने पर बहुत नाराज होते हैं और अपनी बात के आगे न सुनने के आदी नहीं होते है। मेष लग्न के जातक अपनी तकलीफ जल्दी किसी को नहीं बताते है जब भी इन्हें लाभ अवसर मिलते है। यह तुरन्त उसका फायदा उठाते है। इस लग्न वालों के लिए लग्न का स्वामी मंगल पंचम का स्वामी सूर्य और भाग्य का स्वामी गुरू सदैव शुभ फल देते है।

इस लग्न के व्यक्ति को शरीर में प्रतिरोधक क्षमता बढाने के लिए सोने में मंगलवार को मूँगा बुद्धि एंव संतान की प्रगति के लिए रविवार को तांबे या सोने में माणिक और भाग्य के लिए गुरूवार को सोने में पुखराज धारण करने चाहिए। इस लग्न के व्यक्ति को प्रत्येक मंगलवार को हनुमान जी के दर्शन एंव हनुमान चालीसा का पाठ करना चाहिए।

अन्य ग्रहों की स्थिति ठीक–ठीक हो तो जातक इंजिनियर बन सकता है। यदि लग्न का नक्षत्र अश्विनी हो तो जातक का चिकित्सा शास्त्र में काफी रूझान रहता है। और वह डाक्टर आदि भी बन सकता है। इस लग्न वालों के लिए सबसे घातक शुक्र होता है। सप्तम में तुला और वित्तिय भाव में वृष दोनों के स्वामी शुक्र ही होने के कारण यह मारकेश बनता है। इसलिए इस लग्न वालों के लिए शुक्र प्राणो को हरने वाला बताया गया है।

❋❋❋

विशेषताऐं

1. भूलते बहुत कम हैं।
2. हारी बाजी जीतने का दम रखते हैं।
3. सदैव आलस्य रहित रहते हैं।
4. अवसर का तुरन्त लाभ उठाते हैं।

वैवाहिक रस्में और उनका रहस्य

डा. (श्रीमती) कविता बंसल
ज्योतिषाचार्य, वास्तुशास्त्राचार्य, अंक विशारद
प्रवक्ता - अखिल भारतीय-ज्योतिष संस्थान संघ
मो.- 9897135686, 9219577131

आज आधुनिक परिवेश में रंग कर शिक्षित युवा वर्ग विवाह को बोझ समझने लगे है व 'लिविंग रिलेशन बना रहें है। ऐसे युवक युवती भावी दुष्परिणामों से अनभिज्ञ है। उनके लिये रिश्तों को बदलना कपड़े बदलने जैसा है। आये दिन तलाक की घटनाएं हो रहीं है। मेरा लेख विवाह के अर्थ को समझाने का छोटा सा प्रयास है।

भारतीय संस्कृति में विवाह को एक पवित्र संस्कार माना है। सूर्य उत्तरायण से विवाह का सीजन फिर से शुरू हो जाता है और शुरू हो जाती है शादी-विवाह की तैयारियाँ। विवाह संस्कार में सजने सवँरने व श्रृगांर आभूषणों से अंलकृत होना ही सीमित नही है वरन् इस दौरान इतनी धार्मिक रीतियों व रस्मों का पालन करना पड़ता है। जिनका पालन केवल परम्परा मानकर ही नही किया जाता है। बल्कि इनके पीछे कुछ विश्वास व आधार भी है। ये रस्में दोनों परिवारों के बीच परस्पर प्रेम व दाम्पत्य जीवन में रोचकता और मार्गदर्शन प्रदान करती है। आइये जाने इन रस्मों को मनाने के क्या कारण है?

क्या होता है रोका या पक्की होना- भारतीय संस्कृति रघुकुल रीति सदा चलि आई, प्राण जाए पर वचन न जाई, वाली परम्परा को निभाती चली आ रही है। विवाह जैसे फैसले के समय वचन का बहुत महत्व होता है। वर व कन्या पक्ष के लोग एक दूसरे को 'बात पक्की' होने का वचन देते है। कुडंली मिलान व एक-दूसरे को देखने आदि के बाद दोनो परिवार रिश्ता रोकते है। दोनों पक्षों के बीच एक दूसरे को शगुन देकर रजामंदी की मुहर लगा दी जाती है। ताकि रिश्तां की खोज बंद हो जाऐ।

गोद भराई- रोके के बाद वर पक्ष के लोग फल, मिष्ठान एवं श्रृंगार का सामान आदि लेकर कन्या के घर जाते है और उसके आँचल में फल, मेवा, मिष्ठान आदि उपहारों से भरते है। यह परम्परा वंश वृद्धि सौभाग्य वृद्धि के लिये की जाती है।

क्यों लगाया जाता है हल्दी का उबटन?- विवाह के समय वर-कन्या को दही, हल्दी, तेल, दूर्वा आदि का उबटन मला जाता है। दही शीतलता देता है हल्दी व तेल कांति प्रदान करते है। गृहस्थ जीवन की नींव रखने से पहले वर-वधू दोनों को निरोगी बनाना भी हल्दी लगाने का एक कारण है इसके अलावा हल्दी को लक्ष्मी का प्रतीक माना जाता है।

मेंहदी क्यो लगाई जाती है?- किसी भी शुभ अवसर पर व विशेषकर वैवाहिक अवसर पर मेंहदी लगाने का चलन है। मेंहदी के बिना सभी शुभ काम अधुरे से लगते है। ऐसी मान्यता है कि दुल्हन के हाथ में जितनी गाढ़ी मेंहदी रचती है उसका पति उसे उतना ही प्रेम करने वाला होता है इसका अर्थ है कि विवाह के बाद अपने अहम् को भूलकर एक दूसरे को खुशी प्रदान करके वैवाहिक जीवन को सफल बनाऐ।

क्यों बांध जाता है कंगना (कंकण)?- हिन्दू संस्कृति में वर-वधू को विष्णु एवं लक्ष्मी का स्वरूप माना जाता है। जिसप्रकार भगवान विष्णु के हाथ में शंख, चक्र, गदा और पदम होते है। उसीप्रकार विवाह से पूर्व वर-वधू की कलाई में जो कगंना बाधा जाता है। उसमें लोहे का चक्र, मोती, कौड़ी, पीली सरसों और चाकू आदि होते है। लोहे का चक्र मर्यादा का प्रतीक है। मोती वैवाहिक जीवन को अमूल्य बनाने का संकेत देता है। तो कौड़ी उसके निष्कपट रूप का सरसों आपसी संबधों की समरसता का प्रतीक है तो चाकू संकटो से रक्षा का।

सेहरा क्यो बाँधा जाता है- बारात को प्रस्थान करने से पहले दूल्हे के सिर पर सेहरा बांधा जाता है, जिस पर देवी-देवताओं के चित्र बने होते है जिससे विवाह के शुभ अवसर पर देवताओं की कृपा प्राप्त हो। सेहरा चाँदी का बना होता है और चाँदी मस्तिष्क को शीतलता प्रदान करती है और बुरी नजर से बचाती है।

जयमाला का प्रचलन क्यों हुआ- प्राचीन काल में कन्या को मनचाहा वर तलाशने की स्वतन्त्रता थी स्वयंवर प्रथा में कन्या अपने पिता की शर्तो में बँधी होती थी परंतु चयन उनका अपना होता था। आज के युवक-युवती अपनी पसंद से ही जीवनसाथी का चयन करते है इसी के प्रतीक रूप से पहले लड़की वर के गले में जयमाला डालती है फिर वर लड़की के गले में।

शेष पेज 20 **पर**.....

ज्योतिष एवं वास्तुशास्त्र सीखिये
प्रमाण पत्र अखिल भारतीय ज्योतिष संस्था संघ (पंजी.) नई दिल्ली द्वारा
भविष्य दर्शन®
ज्योतिष, वास्तु शिक्षण संस्थान
भगवती कॉम्प्लैक्स, शाह सिनेमा के सामने, आगरा।
फोन : 0562-2856666, 2525262, 9719005262
E-mail : mail@bhavishydarshan.in

पृथ्वी माता का व्रत व पूजन

पं. व्रजकिशोर शर्मा ब्रजवासी
फोन नं. 09811965774

पृथ्वी माता के व्रत व पूजा का विशेष महत्व शास्त्रों व पुराणादि में वर्णित है। सभी ने भू देवी का पूजन कर अपने–अपने योग्य मनोवांछित फलों को प्राप्त करते हुए जीवन का कल्याण किया है। शास्त्रों में अनेक माताओं का वणर्न मिलता है, जैसे– जन्मदा श्रीमाता, गोमाता, पृथ्वीमाता का स्थान सर्वोपरि है। यह माता जीवन भर प्रति क्षण किसी न किसी रुप में हमारे साथ ही रहती व हम सभी की रक्षा करती है। अतः प्रतिदिन इस माँ का आदर करना हमारा परम कर्त्तव्य है। शय्या से उठकर पृथ्वी पर पैर रखने के पूर्व पृथ्वी माता का अभिवादन करे और उन पर पैर रखने की विवशता के लिए उनसे क्षमा माँगते हुए निम्न श्लोक का पाठ करें–

समुद्रवसने देवि पर्वतस्तनमण्डिते।
विष्णुपति नमस्तुभ्यं पादस्पर्श क्षमस्व में।।

अर्थात "समुद्ररुपी वस्त्रों को धारण करने वाली पर्वतरुप स्तनों से मण्डित भगवान विष्णु की पत्नी पृथ्वी देवि! आप मेरे पाद–स्पर्श को क्षमा करें।"

पृथ्वी माता व्रत यदि विचार किया जावे तो नित्य व्रत है। प्रतिदिन पूजन करना भी श्रेयस्कर है। ब्राह्मण जन सभी पूजनों में पृथ्वी माता का पूजन कराते ही हैं। गृह निर्माण या ग्रहारम्भ तथा किसी विशेष आयोजनार्थ (जैसे– रामलीला, कृष्णलीला–विशेष प्रकार के यज्ञादि) भी भूमि पूजन की अनिवार्यता है। शास्त्रों में वर्णित भाद्रपद शुक्ल पंचमी , भाद्रपद शुक्ल तृतीया, श्रावण शुक्ल षष्ठी तथा चैत्र कृष्ण नवमी को पृथ्वी देवी का विशेष व्रत व पूजन का पालन करना ही चाहिए। इन तिथियों में भगवान् वाराह का प्राकटय है और भगवान वाराह की दो पत्नियों में भू–देवी (पृथ्वी माता) का विशेष स्थान है अतः ये जयन्ती तिथियाँ पूजनीय व वन्दनीय हैं। पृथ्वी माता के प्रति अपराध करने वाला, नरक गामी व पृथ्वी माता का सम्मान करने वाला स्वर्गादि लोकों को प्राप्त होता है। अतः प्रत्येक मानव मात्र का पृथ्वी माता के प्रति नित्य पूजन व सम्मान का शुभ संकल्प होना ही जीवन के चारों पुरुषार्थ (धर्म, अर्थ, काम, मोक्ष) को प्रदान कराने वाला है।

पृथ्वी माँ को प्रसन्नता हेतु उनकी उत्पत्ति प्रसंग ध्यान, स्तुति आदि के उपारख्यान का भी पठन–पाठन कल्याणकारी हैः– उत्पत्ति और प्रसंग–भगवान नारायण ने देवर्षि नारद जी को बताया कि यह आदरणीय पृथ्वी मधु और कैटभ के मेद से उत्पन्न हुई है, इसका भाव यह है कि उन दैत्यों के जीवनकाल में पृथ्वी स्पष्ट दिखायी नहीं पड़ती थी। वे जब मर गये, तब उनके शरीर से मेद निकला–वही सूर्य के तेज से सूख गया। अतः 'मेदिनी' इस नाम से पृथ्वी विख्यात हुई। इस मत का स्पष्टीकरण सुनो। पहले सर्वत्र जल–ही जल दृष्टिगोचर हो रहा था। पृथ्वी जल से ढकी थी। मेद से केवल उसका स्पर्श हुआ। अतः लोग उसे 'मेदिनी' कहने लगे।मुने! अब पृथ्वी के सार्थक जन्म का प्रसंग कहता हूँ। यह चरित्र सम्पूर्ण मंगल प्रदान करने वाला है।

मैं पुष्कर क्षेत्र में था। महाभाग धर्म के मुख जो कुछ सुन चुका हूँ, वही तुम से कहूँगा। महाविराट् पुरुष अनन्तकाल से जल में विराजमान् रहते हैं– यह स्पष्ट है। समयानुसार उनके भीतर सर्वव्यापी समष्टि मन प्रकट होता है। महाविराट् पुरुष के सभी रोमकूप उसके आश्रय बन जाते हैं। मुने! उन्हीं रोमकूपों से पृथ्वी निकल आती है। जितने रोमकूप हैं, उन सब में से एक–एक से जल सहित पृथ्वी बार–बार प्रकट होती और छिपती रहती है। सृष्टि के समय प्रकट होकर जल के ऊपर स्थिर रहना और प्रलयकाल उपस्थित होने पर छिपकर जल के भीतर चले जाना– यही इसका

शेष पेज 17 **पर**.....

यदि आप ज्योतिष एवं वास्तु सम्बन्धित किसी भी समस्या के समाधन की उचित सलाह चाहते हैं। लिखें या ईमेल करें–

ज्योतिष परामर्श शुल्क रु. 500/- वास्तु परामर्श शुल्क रु. 1100/- (मकान का नक्सा आवश्यक)

परामर्श शुल्क ड्राफ्ट/ मनीआर्डर द्वारा निम्न पते पर भेज सकते हैं या महेश चन्द शर्मा के एस. बी. आई, एस. एन. एम. सी. शाखा, आगरा, खाता न. **10039621088**, में जमा करा दे।

भविष्य दर्शन®
ज्योतिष, वास्तु शिक्षण संस्थान

आईने का संभल कर प्रयोग करें
(वास्तु में दर्पण-आईने का महत्व)

पं. दयानन्द शास्त्री
विनायक वास्तु एस्ट्रो शोध संस्थान
पुराने पावर हाऊस के पास, कसेरा बाजार,
झालरापाटन सिटी (राजस्थान) **326023**
मो. नं. **09413103883, 09024390067**
e-mail: vastushastri08@yahoo.com

बेडरूम में कभी ना लगांए आइना क्योंकि दर्पण या आइना हमें व्यक्तित्व की झलक दिखाता है। सजना संवरना हा मनुष्य की सामान्य प्रवृति है। आइने के बिना अच्छे से सजने–संवरने की कल्पना भी नही की जा सकती। दिन में कई बार हम खुद का आइने में देखते हैं। इसी वजह आइना ऐसी जगह लगाया जाता है। जहां से हम आसानी से खुद को देख सके। आइना कहाँ लगाना चाहिए और कहाँ नही इस संबंध में विद्वानों और वास्तुशास्त्रियों द्वारा कई महत्वपूर्ण बिंदू बताए गए हैं।

दर्पण सदैव उत्तर अथवा पूर्व दिशा की ओर लगाए जाने पर ही शुभ होते है, दर्पण जितने हलके और बड़े होंगे, उनका प्रभाव उतना ही अधिक होगा, उत्तर और पूर्व की दीवार पर वर्गाकार, आयताकार, अष्टभुजाकार दर्पण ही लगाने चाहियें, गोल दर्पण कभी नही, क्योकि गोल दर्पण में समस्त ऊर्जा उसके निचले बिंदु पर केंद्रित हो जाती है। जो भार वजन का प्रतिनिधित्व करती है.

भवन में नुकीले व् तेजधार वाले दर्पण नहीं लगाने चाहिए, ये हानिकारक होते है. दर्पण का टूटना अशुभ माना जाता है. ऐसी मान्यता है कि कोई मुसीबत इस दर्पण पर टल गयी है टूटे दर्पण को तुरंत ही कटवा कर वर्गाकार, आयताकार, अष्टभुजाकार दर्पण में परिवर्तित कराकर शेष भाग को फेंक देना चाहिए. अतः भवन में दर्पण. आईना अथवा शीशे का प्रयोग करने में निम्नलिखित सावध ाानियों का पालन करना अत्यंत आवश्यक होता है–

1. आवासीय भवन अथवा व्यावसायिक भवन में ईशान (उत्तर–पूर्व) क्षेत्र में दर्पण लगाना चाहिए इसके लगाने से आय में वृद्धि होने लगती है. और व्यवसायिक सम्बन्धी बाधाए दूर होती है

2. आवासीय भवन अथवा व्यावसायिक भवन में दक्षिण, पश्चिम, आग्नेय, वायव्य एंव नैकृत्य दिशा में दीवारों पर लगे हुए दर्पण अशुभ होते है, यदि आपके यहाँ इस प्रकार के दर्पण लगे हुए है, तो उन्हें तुरन्त हटा देना चाहिऐ अथवा ढक देना चाहिए.

3. आवासीय भवन अथवा व्यावसायिक भवन में यदि वायव्य कोण कटा हुआ है, तो कटे हुए भाग की पूरी उत्तरी दीवार पर तीन से चार फुट चौड़ा दर्पण लगाया जा सकता है. इससे इस दोष से मुक्ति मिलती है।

4. दुकानों और शोरूमों की छत पर दर्पण लगाने की परम्परा आधुनिक युग में हैं. दूकान और शोरूम के ईशान और मध्य में छत पर दर्पण नही लगाना चाहिए. इन्ही भागों में दर्पण लगाने से आय में वृद्धि होती है।

5. यदि किसी कारण से आपके भवन और व्यवसाय स्थल का ईशान कोण नैकृत्य कोण से ऊंचा है, तो ईशान कोण की ओर फर्श में आधे से एक फुट चौड़ा दर्पण लगाये तो लाभ का मार्ग प्रस्तुत होगा।

6. कमरें में दरवाजे के अंदर की ओर दर्पण नहीं लगाना चाहिए यदि दरवाजा ईशान दिशा की ओर हो तो दर्पण लगाया जा सकता है.

7. दर्पण के संबंध में एक सबसे महत्वपूर्ण बात यह है कि बेड रूम में आइना लगाना अशुभ है। ऐसा माना जाता है कि इससे पति–पत्नी को कई स्वास्थ्य संबंधी परेशानियां झेलनी पड़ती हैं। यदि पति–पत्नी रात को सोते समय आइने में देखते है तो उनकी सेहत पर प्रतिकूल प्रभाव पड़ता है। यह वास्तु दोष ही है। इससे आपके आर्थिक पक्ष पर बुरा प्रभाव पड़ता है। साथ ही पति–पत्नी दोनों को दिनभर थकान महसूस होती है, आलस्य बना रहता है। इसी वजह से वास्तु के अनुसार बेड़ रूम में आइना न लगाने की सलाह दी जाती है या आइना ऐसी जगह लगाएं जहां से पति–पत्नी रात को सोते समय आइने में न देख सके। वास्तु के अनुसार बेड़रूम में दर्पण नहीं लगाना चाहिए क्योंकि इससे पति–पति के वैवाहिक सम्बन्धों में भारी तनाव पैदा होता है। इसके कारण पति–पत्नी के अच्छे भले सम्बन्धों के बीच किसी तीसरे व्यक्ति का प्रवेश भी हो सकता है।

8. वास्तु शास्त्र के अनुसार घर में लगे दर्पणों से एक प्रकार की ऊर्जा बाहर निकलती है। यह ऊर्जा कितनी अच्छी या कितनी अधिक खराब हो सकती है, यह इस बात पर निर्भर करता है कि दर्पण किस स्थान पर लगा हुआ है।

9. दर्पण का निगेटिव प्रभाव कम करने के लिए उन्हें ढक कर रखना चाहिए अथवा इन्हें अलमारियों के अन्दर की ओर लगवाना चाहिए पलंग पर सो रहे पति–पत्नी को प्रतिबिंबित करने वाला दर्पण तलाक तक का कारण बन सकता है। इसलिए राति के समय दर्पण दृष्टि से ओझल होना चाहिए।

10. भवन के पूर्व और उत्तर दिशा व ईशान कोण में दर्पण उपस्थिति लाभदायक है।

11. भवन में छोटी और संकुचित जगह पर दर्पण रखना चमत्कारी प्रभाव पैदा करता है।

12. दर्पण कहीं लगा हो उसमें शुभ वस्तुओं का प्रतिबिंब होना चाहिए।

13. दर्पण को खिड़की या दरवाजे की ओर देखता हुआ न लगाएँ।

14. अगर आपको ड्रॉइंग रुप छोटा है तो चारों दीवारों पर दर्पण के टाइल्स लगाएँ, लगेगा ही नहीं कि आप अतिथियों के साथ छोटे से कमरे में बैठे हैं।

15. कमरे के दीवारों पर आमने–सामने दर्पण लगाने से घर के सदस्यों में बेचैनी और उलझन होती है।

शेष पेज 21 **पर**.....

क्या प्रलय लेकर आयेगी 2012?

मोनिका गुप्ता
ज्योतिष ऋषि, वास्तु शास्त्राचार्या
टैरो कार्ड रीडर, मो.9319305530

''2012 इस वर्ष का वह खतरनाक मंजर है जो लोगों के दिलों में एक दहशत घोल चुका है। पूरे विश्व में सिर्फ इसी बात की चर्चा है कि पूरी सृष्टि 2012 में खत्म हो जायेगी। पर क्या ऐसा होगा? क्या 2012 में पृथ्वी का सफर खत्म हो जायेगा? क्या भविष्यवक्ताओं की भविष्यवाणियां सच होंगी? आइये जानें।''

पूरे विश्व में 21 दिसम्बर 2012 को लेकर बहुत खौफ हैं। काफी समय से चल रही यह चर्चा क्या सच में एक भयानक रूप लेगी? क्या सच में एक बार फिर नास्त्रेदमस की भविष्यवाणी सच होगी? क्या सचमुच सृष्टि का विनाश सम्भव हैं?

तो, नहीं। ऐसा नही है। काफी समय से चल रही चर्चा कि दिसम्बर 2012 में प्रलय आयेगी और सब खत्म हो जायेगा यह एक मात्र अफवा है। 2012 को लेकर भविष्यवक्ताओं ने लम्बी–लम्बी भविष्यवाणियों की हैं और ज्यादातर लोग इसी खौफ में हैं कि वो समय आ गया जिसका इंतजार लोगों को दहशत के रूप में था। सवाल यह है कि सृष्टि का विनाश हो जायेगा पर जबाव किसी के पास नहीं। पर हम अपने अनुभव से जो गणना का सकते थे वो की हैं।

21 दिसम्बर 2012 को जो ग्रह स्थिति हैं वो इस वात की तरफ बिल्कुल इंगित नहीं करती की प्रलय सम्भव हैं। उस दिन के ग्रह नक्षत्र यह नहीं दर्शा रहे। एक ऐसा प्रलय जिसमें सारे प्राणी मर जाये वो सम्भव नहीं। उस दिन की ग्रह स्थिति किसी बड़े विनाश को नहीं दिखा रही। इससे पहले हुई प्राकृतिक आपदा किसी प्रलय से कम नहीं थीं। सुनामी, भूकम्प, ज्वालामुखी, ग्लोबल वार्मिंग, अकाल, आतंकवाद, युद्ध, बीमारियां अब तक जो चले आ रहें हैं वो किसी भयभीत प्रलय से कम नहीं थे। वो किसी को कह कर या सचेत करके नही आये थें। फिर 2012 की इतनी चर्चायें क्यो? जबकि इस समय की ग्रह स्थिति प्रलय या जनसंख्या को आघात

शेष पेज 20 **पर**.....

लक्ष्मी को स्थाई करने का पर्व अक्षय तृतीया

श्रीमती पूनम दत्ता
मो. 9319221203

यो तो संसार में कई प्रकार की लक्ष्मी से संबंधित साधनाएँ है, जो दिपावली, होली, ग्रहण एवं सिद्धिकाल में की जाती है, सिद्धिकाल में की गई साधनाएँ अवश्य ही पूर्ण होती है, परन्तु कभी हमारे पूर्वजन्माक्रत पाप दोषों के कारण सिद्धि प्राप्त न हीं होती है, या चुक हो जाती है तो यह एक बहुत महत्वपूर्ण पर्व है लक्ष्मी साधना हेतु। इस अक्षय तृतीया के अवसर पर निम्न प्रयोग में लक्ष्मी को घर में स्थायित्व दिया जा सकता है और लक्ष्मी का भंडार स्थपित किया जा सकता है।

लक्ष्मी तंत्र में बताया गया है कि स्वयं कुबेर ने इस साधना के माध्यम से लक्ष्मी को अनुकूल बनाया था, महर्षि विश्वामित्र ने अक्षय तृतीया के अवसर पर लक्ष्मी को पूर्णता के साथ प्रकट किया था। तभी जीवन पर्यन्त उनके आश्रम में कभी बाहरी सहायता की आवश्यकता नहीं हुई व कभी आश्रम में किसी वस्तु की कमी नहीं थी। इस साधना के बारे में स्वयं गोरखनाथ जी ने एक स्थान पर कहा है, भले ही अन्य सारे प्रयोग असफल हो जाय, भले ही साधक नया हो, भले ही उसे स्पष्ट मंत्रों का उच्चारण ज्ञान न हो, उसे पूजा पद्धति की जानकारी न हो, परन्तु अक्षय तृतीया के अवसर पर इस साधना को सम्पन्न करता है तो उसे जीवन में सभी दृष्टियों से पूर्ण अनुकूलता एवं लाभ प्राप्त होता है। एवं इस की पूर्णता के बारे में स्पष्ट करते हुए यहाँ तक कहा गया है कि वह कोई अभागा व्यक्ति ही इस प्रकार के अवसर पर हाथ से गवांयेगा, जिसके भाग्य में दरिद्रता ही लिखी हुई हो वह व्यक्ति ही ऐसा अवसर चूकेगा। जो दीन–हीन दरिद्री हो, वह इस प्रकार की साधना से मुंह मोड़ेगा। अतः यह साधना करें ताकि लक्ष्मी स्थायी रुप से घर में रहे और दरिद्रता, अभाव लाखों मील दूर भाग जाये।

सामाजिक व्यवस्था को संतुलित बनाये रखने के लिए चार प्रकार के पुरुषार्थो, धर्म–अर्थ–काम–मोक्ष का निर्धारण किया गया है। ये चारों पुरुषार्थ प्रत्येक व्यक्ति के जीवन के आवश्यक अंग है,

शेष पेज 21 **पर**.....

सभी प्रकार के सिद्ध यंत्र, सिद्ध तंत्र सामग्री, असली रत्न की अंगूठी, रुद्राक्ष, रत्न व स्फटिक मालायें आदि उपलब्ध करायी जाती हैं

भविष्य दर्शन®
ज्योतिष, वास्तु शिक्षण संस्थान

भगवती कॉम्प्लैक्स, शाह सिनेमा के सामने, आगरा फोन : 0562–2856666, 2525262

परीक्षा में सफलता के राशि सम्मत अचूक उपाय

पवन कुमार मेहरोत्रा
ज्योतिषप्रभाकर एवं अंक विशारद
नज़र दोष विशेषज्ञ
फोन. 9412257617, 8126732115

प्रतिस्पर्धा की दौड़ में हर माता–पिता की यह इच्छा होती है। कि उनका बच्चा परीक्षाओं में अच्छे से अच्छे अंक प्राप्त करके अपना मनपंसद करियर चुने। परन्तु अक्सर देखा गया है कि पूरी मेहनत करने के बाद भी बच्चे अपेक्षित सफलता नहीं प्राप्त कर पाते। ऐसा होने पर माता–पिता निराश हो जाते है। परन्तु यदि कड़ी मेहनत के साथ–साथ यदि बच्चे ज्योतिष और वास्तु के छोटे–छोटे उपाय कर लें और बच्चे अपनी राशि के अनुसार कार्य करें तो निश्चित तौर पर बच्चे सफलता के शिखर तक पहुँच सकते है। कुछ उपाय बच्चे स्वंय करे एवं कुछ उपाय माता–पिता कर सकते है।

1. मेष एंव वृश्चिक राशि के बच्चे इमतिहान के समय लाल रंग के ढक्कन वाला पैन अपने पास रखें। लाल रूमाल अपने पास रखें। सिंदुर का तिलक लगाकर पेपर देने जाये। पेन का कलर भी लाल रंग का होना चाहिए व पेपर पैड़ भी लाल रंग का हो। घर से निकलते समय गुड़ खाकर निकलें। त्रिकोण मंगल यन्त्र अपने पास रखें। यदि सम्भव हो तो इस यन्त्र का पूजन करके घर से निकले। लाल मूंगे की माला भी धारण करें। हनुमान जी पूजा करें।

2. वृष एवं तुला राशि के बच्चे पेपर के समय सफेद रंग के ढक्कन का पेन अपने पास रखें। सफेद रूमाल तथा सफेद रंग का पेपर पैड़ लेकर एक्जाम में जायें। साथ मे पेन्सिल वाक्स भी सफेद रंग का होना चाहिए। घर से निकलते समय दही चीनी खाकर निकले तथा माथे पर सफेद चन्दन का तिलक लगायें। शुक्र यन्त्र अपनी ऊपर जेव या पेन्सिल बोक्स में रखकर ले जाये। यदि सम्भव हो तो इसका पूजन करके घर से निकले। स्फटिक की माला गलें में धारण करें। व स्फटिक का श्री यन्त्र भी बच्चे अपने पढ़ने की टेबल पर रख सकते हैं। देवी दुर्गा की पूजा करें।

3.मिथुन एवं कन्या राशि के बच्चे पेपर को समय हरे रंग के ढंक्कन का पेन लेकर घर से निकले। उनका पेन्सिल का व बोर्ड भी हरे रंग का होना चाहिये। हरे रंग का रुमाल अपने पास रखें। पेन्सिल कबर में तुलसाजी कुछ पाँच पत्तिया रखे रहो व घर से निकले समय भी तुलसाजी की पाँच पत्तियों का सेवन करके निकलें। हरे हकीक की माला धारण करें। बुद्धयंत्र अपने पास रखें व यदि समय हो तो इस यन्त्र की पूजा करके निकलें। तुलसी पर एक जल का लोटा चढ़ायें।

4. कर्क राशि के बच्चे पेपर के समय स्फटिक की माला धारण करके जायें। सफेद ढंक्कन का पेन लेकर जायें तथा पेपर देने जाते समय दही–चीनी खाकर निकले। हमेशा अपने पास सफेद रुमाल अपने पास रखें व बोर्ड सफेद रंग का होना चाहिये। पेन्सिल का ढक्कन भी सफेद रंग का होना चाहिये। चन्द्र यन्त्र को अपनी जेब में रखें। सफेद चन्दन का तिलक लगाकर पेपर देने जायें चन्द्रमा को अर्घ दें।

5. सिंह राशि के बच्चे मैरून ढक्कन का पेन लेकर जायें। मैरून बोर्ड व पेन्सिल बाक्स हो तथा सूर्य यन्त्र ऊपरी जेब में रखें। घर से पेपर देने के लिये निकलते समय गुड़ खाकर निकले। सूर्य भगवान को ताबें के लोटे से अर्घ्य दें। आदित्य हृदय स्त्रोत का पाठ करें। मैरून रुमाल अपनी जेब में रखें। रोली का तिलक माथे पर लगाकर पेपर देने जायें।

6. धनु व मीन राशि के बच्चे पीले रंग के ढक्कन का पेन, बोर्ड व पेन्सिल बाक्स लेकर जायें। पीले रंग का रुमाल अपने पास रखें। बेसन का लड्डू खाकर पेपर के लिये घर से निकले। हल्दी की माला गले में धारण करे। गुरु यन्त्र अपने पास रखें व गुरु यन्त्र का पूजन करके घर से निकले। पीले पुष्प भी अपने पास रख सकते है। ब्राहमणों के पैर छूकर अर्शीवाद लें। मन्दिर में दर्शन करके पेपर के लिये जायें। केलें के वृक्ष पर एक लोटा जल डालें।

7. मकर व कुम्भ राशि के बच्चे काले पेन, पेन्सिल वाक्स, पेपर पैड़, रूमाल अपने पास रखें। लोहे का छल्ला धारण करें। शनि स्त्रोत का 3 बार पाठ करें। काले तिल के लडडू खाकर पेपर देने जायें। शनि यन्त्र अपने पास रखें। काले उड़द के 8 दाने अपने पास रखें।

❋❋❋

यदि आप ज्योतिष एवं वास्तु सम्बन्धित किसी भी समस्या के समाधन की उचित सलाह चाहते हैं। लिखें या ईमेल करें–

ज्योतिष परामर्श शुल्क रु. 500/- वास्तु परामर्श शुल्क रु. 1100/- (मकान का नक्सा आवश्यक)

परामर्श शुल्क ड्राफ्ट/ मनीआर्डर द्वारा निम्न पते पर भेज सकते हैं या महेश चन्द शर्मा के एस. बी. आई, एस. एन. एम. सी. शाखा, आगरा, खाता न. **10039621088**, में जमा करा दे।

भविष्य दर्शन®
ज्योतिष, वास्तु शिक्षण संस्थान

कब होता है प्रेम-विवाह

पं. अजय दत्ता
ज्योतिष एवं वास्तु परामर्शदाता
मो. 9319221203

किसी भी युगल का जब प्रेम विवाह होता है, तो उसमें पूर्व उनमें दोस्ती का रिश्ता अवश्य कायम होता है। जन्मपत्री में मित्रता का विचार पंचम एवं एकादश भाव से किया जाता है, शनि प्रेम विवाह के लिए सप्तम भाव या सप्तमेश का पंचमेश–लाभेश से संयोग होना आवश्यक है, लेकिन यह संयोग ही पर्याप्त नहीं है, कुदृ अन्य कारण भी हैं, जो प्रेम विवाह को प्रभावित करते हैं। प्रेम विवाह का निर्णय लेना बहुत ही साहसिक कार्य होता है। साहस का नैसर्गिक कारक मंगल को माना जाता है तथा जन्मपत्रिका में इसका विचार तृतीय–तृतीयेश से किया जाता है। प्रेम विवाह होने से पूर्व किसी भी युगल के मध्य एक आकर्षण शक्ति अवश्य उत्पन्न होती है, इसी कारण वे परस्पर मित्रता करते हैं और कुछ ही समय के मेल–जोल के पश्चात् एक–दूसरे के प्यार में डूब जाते हैं। इस आकर्षण का कारण मन होता है, जिसे चंद्रमा नियंत्रित करता है, अतः प्रेम विवाह का विचार करते समय चंद्रमा की स्थिति को भी अवश्य देखना चाहिए। चंद्रमा के साथ सप्तम–सप्तमेश की स्थिति भी आकर्षण उत्पन्न करने में सहायक होती है। यह तो हुई प्रेम विवाह में सहायक योगों की बात। अब प्रेम विवाह में पृथक्ताकारक या अलगावकारक स्थितियों को समझते हैं। उपर्युक्त स्थितियों में से यदि सभी सुदृढ़ हों, लेकिन उका षष्ठ भाव, द्वादश भाव या उनके भावेशें तथा राहु या शनि से संबंध बन रहा हो, तो ये योग प्रेम विवाह में बाधक होते हैं। इन सभी स्थितियों के आधार पर प्रेम विवाह से संबंधित योगों का वर्णन करते हैं।

1. जब सप्तमेश पंचम अथवा एकादश भाव में शुक्र या मंगल से युति करते हुए स्थित, हो, तो जातक की रुचि प्रेम विवाह में होती है।

शेष पेज 22 **पर**.....

धर्म को धर्म की आँख से ही देखना चाहिए

सुरेश अग्रवाल
मो. 9897137268

शास्त्रों में मनुष्यों के कर्त्तव्य रूप में चार पुरूषार्थ बताये गए हैं, वे हैं– धर्म, अर्थ काम और मोक्ष। इनमें प्रथम पुरूषार्थ 'धर्म' को कहा गया है। इसका तात्पर्य हुआ कि धर्म का पालन ही मनुष्य का मुख्य कर्त्तव्य है। किन्तु विभिन्न सम्प्रदायों ने अपने–अपने मतानुसार निरूपति सिद्धान्तों को ही धर्म कह दिया और अपने–अपने पक्ष में ही वे धर्म को सीमित करने की चेष्टा कर रहे हैं। यही नहीं वे जन सामान्य की भावनाओं से खिलवाड़ कर रहे हैं–उन्हें भटका रहे हैं। प्राचीन ऋषि महर्षि धर्म की व्यापकता में श्रेष्ठता की खोज में लगे रहे हैं– उनका उद्देश्य धर्म को किसी सम्प्रदाय विशेष में बाँधने या अपना धर्म चलाने का कभी नहीं रहा। उनकी खोज का निष्कर्ष यही रहा कि धर्म है तो मानव है और मानव है तो धर्म है। **जिस धर्म में समाजोत्थान की भावना निहित हो, सच्चा धर्म वही हो सकता है।**

"अर्थ और काम" दोनों ही भौतिकता से सम्बन्ध रखते हैं। मानव जीवन के लिए दोनों ही अनिवार्य हैं। इन दोनों पुरुषार्थो को अस्वीकार करना, उन्हीं के लिए सम्भव है, जो सांसारिक भोगों से पूर्णरुपेण विरक्त हो चुके हैं। **अपनी उन्नति के साथ समाजोत्थान का भी ध्यान रखना और भोगों को त्याग पूर्वक भोगना ही मानव धर्म है। लोभ** मत करो–यह धन ईश्वर से भिन्न किसी का भी न हीं भारतवर्ष में मूल रुप से निवास करने वाली "आर्यजाति", जो बाद में "हिन्दू जाति" कहलाने लगी, सदा से अत्यन्त उदार रही है। उसे बाहरी जगत को अपने में समाहित करने का प्रयत्न किया। **विश्वबन्धुत्व और मानवमात्र के कल्याण की भावना भारतीय संस्कृति में ही रही है।** उसने सदा से ही धर्म को धर्म की आँख से देखा है। इसलिए ऋषि कहते

शेष पेज 22 **पर**.....

घर, फैक्ट्री, दुकान, शोरूम, हॉस्पीटल, कॉलेज, पेट्रोल पम्प, सिनेमाघर,
कोल्ड स्टोरज एवं बड़े आद्योगिक प्रतिष्ठान के वास्तुदोषों का बिना
तोड़ फोड़ वैज्ञानिक निवारण एवं आंतरिक साज सज्जा

डॉ. महेश पारासर
भविष्य दर्शन®
ज्योतिष, वास्तु शिक्षण संस्थान

भगवती कॉम्प्लैक्स, शाह सिनेमा के सामने, आगरा फोन : 0562–2856666, 2525262

होली पर जानें रंगों की भाषा

श्रीमती रेनू कपूर
वास्तु ऋषि
9219413439, 9837755255
E-mail.vastumandiram@rediffmail.com

समाज के सभी वर्ग के लोगों को एक सूत्र में बाँधने का कार्य करने वाला त्यौहार होली हर्षोल्लास से मनाया जाता है, क्योंकि विभिन्न प्रकार के रंगों का ध्यान व्यक्ति के बोझिल मन को प्रसन्नचित्त बनाने की सार्मथ्य रखता है। हमारे चारों और सभी वस्तुओं का कोई ना कोई रंग होता है और सभी वस्तुओं के रंग भी अलग–अलग होते है रंग का माध्यम ही वस्तु की पहचान बनाता है। हमारी हिन्दु संस्कृति में भी रंगों के महत्त्व को ध्यान में रखकर देवी देवताओं के कुछ नाम भी रंगों पर ही आधारित है जैसे–कृष्ण, पांडुरंग, श्री रंग, नीलकण्ठ, गौरी, काल भैरव आदि। ऋषि महर्षियों के वैज्ञानिक चिंतन के कारण ही रंगशास्त्र को पूर्णतया विद्युत चुम्बकीय और रसायनिक परिणामों का परिपाक भी कहा गया है।

रंगों को जितना हम देखकर अनुभव कर सकते हैं उससे भी कहीं अधिक रंगों का प्रभाव होता है। रंग एक तरह से भावनात्मक वातावरण पैदा करते है जिसका प्रभाव हर व्यक्ति पर उसके मनोभावों पर अलग–अलग रुप से परिलक्षित होता है रंगों की आकर्षण शक्ति चाहे व पहनने वाले वस्त्र के रुप में हो अथवा हमारे भवन के साज सज्जा के रुप में प्रयुक्त होने वाली वस्तुओं के रुप में ये सब व्यक्ति को अपनी ओर आकर्षित करते हैं। रंगों की अद्भभुत शक्ति के कारण रंग चिकित्सा के द्वारा भी अनेक व्यक्ति स्वास्थय लाभ प्राप्त कर रंगों के महत्व को बताते हैं। कि रंग व्यक्ति के शरीर ही नहीं मन और चेतना तक को प्रभावित करते हैं। रंगों की आकर्षण शक्ति के कारण ही अस्पताल, फैक्ट्री, स्कूल, ऑफिस, साइन वोर्ड, विज्ञापन, मोनोग्राम आदि में रंगों की एक विशेष पहचान बन गई है। भवन की दीवारों पर हल्कों रंग व्यक्ति की चिन्ता को दूर कर उसे प्रसन्नचित्त बनाते है हल्के व अच्छे लगने वाले सुखद रंगों को अपना कर व्यक्ति अपने जीवन में खुशहाली का वातावरण स्वयं निर्माण कर सकता है। रंगों का सही व संतुलित प्रयोग हमारे आस–पास के वातावरण को हमारे भवन को न केवल सौन्दर्य बढ़ाता है अपितु सम्पन्नता व सुख समृद्धि भी लाता हैं।

सफेद रंग– सम्पूर्ण विश्व को जीवनदायिनी ऊर्जा देने वाले भगवान सूर्य की सप्त रश्मियों में सफेद रंग को रंगों का प्रमुख रंग माना गया है यह रंग इसी कारण पूर्व दिशा का प्रतिनिधित्व करता है इस रंग का किसी रंग के साथ प्रयोग अत्यन्त प्रभावशाली बनाया जा सकता है। यह रंग अध्यापकों व विद्वानों के लिये उपयुक्त माना जाता है।

पीला रंग–इस रंग को बृहस्पति ग्रह का रंग माना गया है यह उत्तर पूर्व दिशा का प्रतिनिधित्व करता है। यह रंग सृष्टि को गतिशील रखने के कारण उष्मा व ऊर्जा का सुखद अनुभव कराता है। पीला रंग विशेषरुप से व्यापार करने वालों व्यक्तियों के लिये अत्यन्त लाभकारी होता है।

लाल रंग–मंगल ग्रह का प्रतीक लाल रंग जो दक्षिण दिशा का प्रतिनिधित्व करता है। यह रंग दृढ़ जीवन शक्ति व सर्घष का भी प्रतीक है लाल रंग योद्धाओं अर्थात सैनिकों के लिये अति उपयुक्त है। इसके विपरीत उस रंग का अधिक उपयोग व्यक्ति को क्रोधी भी बताता है।

हरा रंग–उत्तर दिशा का प्रतिनिधित्व करने वाला हरा रंग बुध ग्रह का प्रतीक है। जिस प्रकार हरी भरी प्रकृति खुशहाली और स्वास्थय का प्रतीक होती है उसी प्रकार हरा रंग व्यक्ति की खुशहाली व स्वास्थ्य का प्रतीक बन जाता है यह रंग सर्वाधिक व संतुलित शान्त रंग होने के कारण रोगियों को भी सुखद अहसास

शेष पेज 23 **पर**.....

सभी प्रकार के सिद्ध यंत्र, सिद्ध तंत्र सामग्री,
असली रत्न की अंगूठी, रुद्राक्ष, रत्न व स्फटिक
मालायें आदि उपलब्ध करायी जाती हैं
भविष्य दर्शन®
ज्योतिष, वास्तु शिक्षण संस्थान
भगवती कॉम्प्लैक्स, शाह सिनेमा के सामने, आगरा फोन : 0562–2856666, 2525262

मनोकामना पूर्ति हेतु मन्त्र

पं. विष्णु पाराशर
ज्योतिष प्रभाकर
मो. 9837966404

मन्त्र किसी शब्द अथवा समूह की वह ध्वनि है जो अपने उच्चारण में ऐसी शक्ति उत्पन्न करती है जिसके प्रभाव से वह इच्छित कार्य को पूर्ण करने में समर्थ हो जाता है।

मन्त्र शब्द के सम्बन्ध में की गई समस्त व्याख्याओं का सार यही है कि विश्व में व्याप्त अद्रश्य शक्ति को (अध्यात्मिक अर्थात अलोकिक शक्ति) स्फुरित करके उसे अपने अनुकूल बनाने वाली विद्या को मन्त्र कहते हैं।

सभी प्रकार की विपत्ति नाश के लिए

ऊँ ऐं ह्री श्रीं नमो भगवते हनुमते मम कार्येषु ज्वलज्वल प्रज्वलप्रज्वल असाध्यं साधय मां रक्षरक्ष सर्वदुष्टेभ्यो हुं फट स्वाहा

मंगलवार से शुरु करके इस मन्त्र का प्रतिदिन 108 बार जप करता है कम–से–कम सात मंगलवार तक तो अवश्य करे इससे इसके फलस्वरुप घर का पारस्परिक विग्रह मिटता है दुष्टों का निवारण होता है और बड़ा कठिन कार्य भी आसीनी से सफल हो जाता है।

मनोकामना पूर्ति के लिए

ऊँ ऐं ह्रीं श्रीं नमो भगवते राधाप्रियाय राधा रमणाय गोपीजन्वल्लभाय ममाभीष्ट्म पूरय हुं फट स्वाहा

इस मन्त्र को कदम्ब की लकड़ी की चौकी पर अष्टगंध अथवा कपूर और केशर से अनार की कलम से लिख कर षोडशोपचार से पूजन करे परन्तु नित्य का जप 1800 से कम नहीं होना चाहिए सवा लाख जप और दशांश हवन करवाना चाहिए।

धन संपत्ति की प्राप्ति के लिए

कुबेर त्वम् धनाधीश गृहे ते कमला स्थिता।

शेष पेज 23 पर.....

बडें बूढ़ो के शब्दो में छुपा ज्योतिष

श्रीमती नूतन
ज्योतिष प्रभाकर
मो. 9720695096

हमारे दादा–दादी, नाना–नानी समय–समय पर हमें बहुत सी नसीहत अथवा सलाह देते ही रहते है। जो कि कभी–कभी ता हमें भली लगती है। तो कभी टोका–टाकी सी प्रतीत होती है। कभी लगता है कि यह सब उनका पुराना अनुभव है तो कभी सुनी–सुनाई दखियामूसी बातें है यह कह कर हम भुला देते है।

परन्तु यदि उनकी बातों को हम ध्यान से सुनकर समझे तो उसमें भी हमें ज्योतिष का प्राप्त होगा। जो कि मेरा व्यक्तिगत अनुभव भी है। कम पढ़े–लिखे कर्मकाड के ज्ञान से भी अनजान हमारे बुजुर्ग जो बाते या सलाह कहते व सिखाते आयें है। यदि हम सभी उनका पालन श्रद्धा व नियमित से करें तो देखा जाता है। कि नवग्रहों से होने वाली सामान्य समस्याओं का निदान स्वतः ही सरलता से हो जाता है। जैसेः– **सूर्यः** पिता व पिता तुल्य सभी के चरण स्पर्श करें व सूर्य को नियमित जल दें। **चन्द्रः** माता का सम्मान न करें व जल का सेवन अधिक करें। **मंगलः** बच्चों वीरता की कहानी सुनायें परन्तु दुस्साहसी बनने से रोकें। **बुधः** अपशब्दो का प्रयोग नही करें, कम बोले। **गुरूः** बाहमणों व शिक्षको का सम्मान करें व गाय की सेवा करें। **शुक्रः** अधिक खुशबू का प्रयोग ना करें। **शनिः** प्रतिदिन स्नानादि कर स्वंय को स्वच्छ रखें। **राहूः** अश्लील सहित्य व तम्बाकू, मदिरा अदि से दूर रहें। **केतूः** कूत्तो को रोटी डालें व अन्य पशुओं पर भी दया करें।

यदि इस प्रकार नियम हम अपने जीवन में अपनाकर प्रयोग करें तो विश्वास करें कि नवग्रहो के नाकात्मक प्रभाव से ना केवल बच पायेगें अपितु उनके नैसर्गिकि साकारात्मक प्रभाव सरलता से हमें प्राप्त हो जायेंगें। जैसेः– **सूर्य से** सम्मान, यश व स्वास्थय **चन्द्र से** आत्मविश्वास **मंगल से** साहस व निडरता **बुध से** ओजस्वी वाणी व निर्मल बुद्धि **गुरू से** विद्या व ज्ञान का विस्तार **शुक्र से** धन व ऐश्वर्य **शनि से** दरिद्रता से मुक्ति **राहू से** उत्तम चरित्र **केतू से** पवित्र मानवता। ❋ ❋ ❋

ज्योतिष एवं वास्तुशास्त्र सीखिये
प्रमाण पत्र अखिल भारतीय ज्योतिष संस्था संघ (पंजी.) नई दिल्ली द्वारा
भविष्य दर्शन®
ज्योतिष, वास्तु शिक्षण संस्थान
भगवती कॉम्प्लैक्स, शाह सिनेमा के सामने, आगरा।
फोन : 0562-2856666, 2525262, 9719005262
E-mail : mail@bhavishydarshan.in

16 फरवरी - 15 मार्च

मेष (ARIES)- चू, चे, चो, ला, ली, लु, ले, लो, अ-- इस मास में स्वास्थ्य ठीक नहीं रहेगा। आर्थिक लाभ होने की संभावना रहेगी। घरेलू परेशानी निरन्तर लगी रहेगी। दुर्घटना होने की संभावना रहेगी। मानसिक तनाव रहेगा।

वृष (TAURES) - इ, उ, ए, ओ, वा, वी, वू, वे, वो– इस मास में शरीरिक कष्ट होने की संभावना रहेगी। कारोबार मे रूकावटें आने की संभावना रहेगी। भाग्य से सहयोग नहीं मिलेगा। सन्तान पक्ष से चिन्ता लगी रहेगी। नई योजना से लाभ की प्राप्ति होगी।

मिथुन (GEMINI)- क, की, कू, घ, ढ़, छ, के, को, हा– प्रियजनों में किसी को शारीरिक कष्ट होने की संभावना रहेगी। पत्नि को शारीरिक कष्ट होने की सभांवना रहेगी। मित्रों से अनबन की स्थिति बनेगी। व्यवसाय में रुकावटें आयेंगी। फालतू के विवादों में न पड़े।

कर्क (CANCER)- ही, हू, हे, हो, डा, डी, डू, डे, डो– इस मास में धन हानि होने का भय रहेगा। कार्य में निरन्तर लाभ की प्राप्ति होगी। मित्रों का पूर्ण सुख प्राप्त होगा। शुभ कार्यो में मन लगेगा। शत्रु पक्ष हावी रहेगा।

सिंह (LEO)– मा, मी, मू, मे, मो, टा, टी, टू, टे– इस मास में स्वास्थ्य उत्तम रहेगा। कारोबार ठीक चलेगा। प्रियजनो का पूर्ण सहयोग मिलेगा। सम्पत्ति संबंधित विवाद होना भी संभव हैं। आर्थिक हानि होने की सभांवना रहेगी।

कन्या (VIRGO)– टो, प, पी, पू, ष, ण, ठ, पे, पो– इस मास में स्वास्थ्य ठीक नहीं रहेगा। गुप्त शत्रु से सावधान रहें। आर्थिक लाभ होने की सभांवना रहेगी। यात्रा में कष्ट होने की संभावना रहेगी। शत्रु प्रबल रहेगें।

तुला (LIBRA)– रा, री, रू, रे, रो, ता, ती, तू, ते– इस मास में स्वास्थ्य ठीक रहेगा। सम्पत्ति से लाभ होने की संभावना रहेगी। व्यवसाय में रूकावटें आने की संभावना रहेगी। पत्नि का पूर्ण सहयोग एवं लाभ की प्राप्ति होगी। मास का अन्त शुभ रहेगा।

वृश्चिक (SCORPIO)- तो, ना, नी, नू, ने, नो, या, यी, यू– इस मास में स्वास्थ्य ठीक नहीं रहेगा। कार्य में निरन्तर लाभ की प्राप्ति होगी। कारोबार ठीक रहेगा। पत्नि को शारीरिक कष्ट होने की संभावना रहेगी। शत्रुओं पर आप हावी रहेंगे।

धनु (SAGITTARIUS)- ये, यो, भा, भी, भू, धा, फा, ढ़ा, भे- इस मास में स्वास्थ्य उत्तम रहेगा। शत्रु प्रबल रहेगा। मित्रों का पूर्ण सहयोग मिलेगा। अर्थ हानि होने की संभावना रहेगी। पत्नि को शारीरिक कष्ट होने की संभावना रहेगी।

मकर (CAPRICORN)- भो, जा, जी, खी, खू, खे, खो, गा, गी– इस मास में स्वास्थ्य उत्तम रहेगा। अपमान होने का भय रहेगा। मित्रवर्ग से अनबन रहेगी। निजी लोगों से परेशानी होने की संभावना रहेगी। कार्य में निरन्तर लाभ की प्राप्ति होगी।

कुम्भ (AQUARIUS)- गू, गे, गो, सा, सी, सू, से, सो, दा- इस मास में स्वास्थ्य ठीक नहीं रहेगा। कारोबार में हानि होने की संभावना रहेगी। प्रियजनों से मनमुटाव की स्थिति बनने की संभावना रहेगी। भाइयों का पूर्ण सुख प्राप्त होगा।

मीन (PISCES)- दी, दू, थ, झ, ञ, दे, दो, चा, ची - आर्थिक लाभ होने पर भी हानि का भय रहेगा। फालतू के विवादों से बचें। यात्रा में कष्ट होने की संभावना रहेगी। मानसिक तनाव अधिक रहेगा। इस मास में स्वास्थ्य उत्तम रहेगा परन्तु मास के अन्त में कुछ ठीक रहेगा।

पुष्पित पारासर
ज्योतिषऋषि, वास्तुऋषि, अंकविशारद

भारतीय अन्य पर्व त्यौहार

फरवरी	मार्च
16. श्री राम दास जयंती	**1.** दुर्गाष्टमी, होलिकाष्टक प्रारम्भ
17. स्वामी दयानन्द सरस्वती जयंती, विजया एकादशी व्रत	**4.** आंवला एकादशी व्रत
19. प्रदोष व्रत	**5.** गोविन्द द्वादशी, **6.** प्रदोष व्रत
20. महाशिव रात्रि व्रत	**7.** पूर्णिमा व्रत, पूर्णिमा होलिका दहन
21. फाल्गुनि अमावस्या	**8.** विश्व महिला दिवस, धुलैड़ी (बसंत उत्सव)
23. फुलैरा दौज, श्री रामकृष्ण परम हंस जयंती	**11.** श्री गणेश चतुर्थी व्रत
25. श्री विनायक चतुर्थी व्रत	**12.** रंग पंचमी, **13.** एक नाथ षष्ठी, **14.** भानु सप्तमी पूजन
28. डॉ. रोजन्द्र प्रसाद पु.ति.	**15.** शीतलाष्टम

ग्रहारम्भ मुहूर्त
फरवरी–24, 25
मार्च – 5

गृह प्रवेश मुहूर्त
फरवरी–18, 23, 24, 25
मार्च – 5

दुकान शुरू करने का मुहूर्त
फरवरी – 23, 24, 25, 27
मार्च –1, 4, 5, 8, 9

नामकरण संस्कार मुहूर्त
फरवरी–16, 20
मार्च – 2, 3, 4, 6, 7,14

सर्वार्थ सिद्ध योग

फरवरी	मार्च
19 ता. सू.उ. से 23:14 तक	05 ता. सू.उ. से 23:48 तक
20 ता. सू.उ. से 23:35 तक	06 ता. सू.उ. से 22:49 तक
26 ता. 7:58 से सू.उ. तक	
28 ता. 4:03 से सू.उ. तक	
29 ता. सू.उ. से सू.उ. तक	

16 मार्च - 15 अप्रैल

मेष (ARIES)- चू, चे, चो, ला, ली, लु, ले, लो, अ- इस मास में स्वास्थ्य खराब रहेगा। भाइयों का सुख प्राप्त होगा। अच्छे लोगों से मेल सूत्र जुड़ेंगे। आय के बराबर व्यय होगा। मास के अन्त में शुभ रहेगा।

वृष (TAURES) - इ, उ, ए, ओ, वा, वी, वू, वे, वो– इस मास में आप शत्रुओं पर हावी रहेंगे। शत्रु प्रबल रहेंगे। यात्रा होना भी संभव है। व्यवसाय में रुकावटें आने की संभावना रहेगी। पत्नि का पूर्ण सुख प्राप्त होगा।

मिथुन (GEMINI)- क, की, कू, घ, ढ़, छ, के, को, हा– इस मास में स्वास्थ्य खराब रहेगा। शत्रुओं की वृद्धि होने की संभावना रहेगी। पत्नि को शारीरिक कष्ट होने की संभावना रहेगी। व्यवसाय ठीक रहेगा। चोट से बचें। योजनाओं से लाभ होगा।

कर्क (CANCER)- ही, हू, हे, हो, डा, डी, डू, डे, डो– इस मास में स्वास्थ्य उत्तम रहेगा। पत्नि का पूर्ण सुख प्राप्त होगा। मित्रों का पूर्ण सहयोग प्राप्त होगा। घरेलू परेशानी निरन्तर लगी रहेंगी। पत्नि से पूर्ण सहयोग प्राप्त होगा। मास के अन्त में स्वास्थ्य अधिक खराब रहेगा।

सिंह (LEO)– मा, मी, मू, मे, मो, टा, टी, टू, टे– इस मास में स्वास्थ्य ठीक नहीं रहेगा। अर्थ लाभ होकर भी हानि होने का भय रहेगा। पत्नि को शारीरिक कष्ट होने की संभावना रहेगा। अपमान होने का भय रहेगा।

कन्या (VIRGO)– टो, प, पी, पू, ष, ण, ठ, पे, पो– व्यापार में धन हानि होने की संभावना रहेगी। इस माह में स्वास्थ्य ठीक रहेगा। परेशानी होने की संभावना रहेगी। जमीन-जायदाद संबंधित परेशानी लगी रहेंगी। यात्रा में कष्ट से बचें।

तुला (LIBRA)– रा, री, रू, रे, रो, ता, ती, तू, ते– इस माह में स्वास्थ्य ठीक रहेगा। यात्रा में कष्ट होना भी संभव है। अर्थ हानि होने की संभावना रहेगी। धन लाभ होने की संभावना रहेगी। निजीजनों का पूर्ण सहयोग प्राप्त होगा।

वृश्चिक (SCORPIO)- तो, ना, नी, नू, ने, नो, या, यी, यू– पत्नि को शारीरिक कष्ट होने की संभावना रहेगी। आर्थिक हानि होने की संभावना रहेगी। रोग का भय रहेगा। मास के अन्त में लाभ की प्राप्ति होगी।

धनु (SAGITTARIUS)- ये, यो, भा, भी, भू, धा, फा, ढ़ा, भे- इस मास में स्वास्थ्य ठीक नहीं रहेगा। धन हानि होते हुये लाभ होने की संभावना रहेगी। घरेलू परेशानी निरन्तर लगी रहेंगी। नई योजनाओं से लाभ होने की संभावना रहेगी। इस मास में स्वास्थ्य उत्तम रहेगा।

मकर (CAPRICORN)- भो, जा, जी, खी, खू, खे, खो, गा, गी– इस मास में वायु विकार संबंधी कारोबार में लाभ होने की संभावना रहेगी। यात्रा में कष्ट से बचें। प्रियजनों का सुख प्राप्त होगा। सन्तानपक्ष अच्छा रहेगा। मास के अन्त में खर्चे अधिक होंगे।

कुम्भ (AQUARIUS)- गू, गे, गो, सा, सी, सू, से, सो, दा- मास के अन्त में विशेष हानि होने का भय रहेगा। पत्नि को शारीरिक कष्ट होने की संभावना रहेगी। कार्य से निरन्तर लाभ होने की संभावना रहेगी। शत्रु प्रबल होंगे। व्यवसाय ठीक रहेगा।

मीन (PISCES)- दी, दू, थ, झ, ञ, दे, दो, चा, ची - इस माह में स्वास्थ्य ठीक रहेगा। धन लाभ होने की संभावना रहेगी। व्यवसाय में बदलाव होने की संभावना रहेगी। जमीन-जायदाद संबंधित परेशानी लगी रहेंगी। घरेलू परेशानी निरन्तर लगी रहेंगी।

पुष्पित पारासर
ज्योतिषऋषि, वास्तुऋषि, अंकविशारद

भारतीय अन्य पर्व त्यौहार

मार्च	अप्रैल
23 नवरात्रा प्रराम्भ **24** द्वितीय नवरात्रा **25** तृतीय नवरात्रा गणगौर व्रत **26** चतुर्थ नवरात्रा **27** श्री पंचमी **29** स्कन्द षष्ठी **30** भानु सप्तमी **31** दुर्गाष्टमी व्रत	**01** राम नवमी, स्वामी नारायण जं. मूर्ख दिवस, विश्व स्वास्थ्य दि. **03** कामदा एकादशी व्रत **04** प्रदोष व्रत, महावीर स्वामी जयंती, वामन द्वादशी **06** पूर्णिमा, श्री हनुमान जयंती **09** श्री गणेश चतुर्शी व्रत **11** गुरू तेजबहादुर जं **13.** कालाष्टमी **14.** डॉ. भीम राव अम्बेडकर जं.

ग्रहारम्भ मुहूर्त
नही है।

गृह प्रवेश मुहूर्त
नही है।

दुकान शुरू करने का मुहूर्त
नही है।

नामकरण संस्कार मुहूर्त
मार्च– 16 ,21 ,30

सर्वार्थ सिद्ध योग

मार्च	अप्रैल
23 ता. 12:33 से सू.उ. तक	01 ता. प्रातः 9:12 से 02 ता. प्रातः 9:34 तक 03 ता. सू. उ. से प्रातः 09:05 तक 07 ता. रात्रि 09:52 से रात्रि अंत 5:59 तक 14 ता. प्रातः 10:37 से रा. अं 5:52

'हित-अहित'

मामा की कलम से.....

श्री विजय शर्मा
मो. 9412263505

पिछले क्रमांक से आगे.....

वीरवर की बात सुनकर राजलक्ष्मी अन्तर्ध्यान हो गयी। वीरवर उसी समय अपने घर की ओर चल दिया। राजा शूद्रक जोकि वीरवर को टूर खड़ा हुआ देख रहा था–उसके पीछे–पीछे चल दिया। घर पहुंचकर वीरवर ने अपनी पत्नी और पुत्र को जगाया। उसने शुरु से आखिर तक सारी बात दोनों को सुना दी। पिता की बात सुनकर शक्तिधर प्रसन्न होकर बोला, "पिताजी! मैं धन्य हूं, जो आज मैं अपने राजा और स्वामी के काम आ रहा हूं। अब आप विलम्ब न करें, मुझे शीघ्र आप भगवती माता के मन्दिर में ले चलें। ऐसे अच्छे कार्य के लिए प्राणों का त्याग श्रेष्ठ है। शास्त्रों में लिखा है कि बुद्धिमान पुरुषों को चाहिए कि परोपकार के लिए अपना धन और जीवन दोनों का समर्पण कर दें।"

वीरवर की पत्नी बोली, "जो यह नहीं करेंगे तो और किस काम से इतने अधिक वेतन के ऋण से हम मुक्त कैसे होंगे?"

वीरवर दोनों की बात सुनकर बोला, "मां भगवती! आप प्रसन्न हों। महाराज शुद्रक की जय हो। मेरा पुत्र आपकी बलि के लिए उपस्थित है। आप इसे स्वीकार करें।"

मन्दिर में पूरी तरह अन्धेरी रात का सन्नाटा छाया हुआ था।– जैसे–तैसे करके वीरवर तथा उसकी पत्नी ने मिलकर मन्दिर में रोशनी का प्रबन्ध किया। उन्होंने मन्दिर के अहाते में खड़े पेड़ों के पत्ते एकत्र करके उनमें आग लगाई। मन्दिर में किसी तरह उजाला हुआ यह भी अस्थायी। पत्ते कुछ देर जलने के बाद स्वयं मुझ गये, पुनः अन्धेरा हुआ।

वीरवर ने पुनः भगवती माता के सम्मुख खड़े होकर कहा, "मां भगवती! आप प्रसन्न हों। महाराज शूद्रक की जय हो। मेरा पुत्र आपकी बलि के लिए उपस्थित है। आप इसे स्वीकार करें।" इतना कहकर वीरवर ने अपनी तलवार से पुत्र का गला काट दिया।

वीरवर ऐसा करके कुछ क्षण शान्त खड़ा रहा, फिर उसने सोचा– बिना पुत्र के मेरा जीवन निरर्थक है। अब क्या इस जीवन में मुझे ऐसा सौभाग्यशाली और पितृभक्त पुत्र प्राप्त हो सकेगा? फिर पुत्रहीन होकर इस जीवन को जीने से क्या लाभ? सोचकर वीरवर ने उसी तलवार से अपनी गर्दन काट ली।

पति और पुत्र के शोक से पीड़ित स्त्री भला कैसे पीछे रहती, उसने भी अपना सिर काटकर पतिव्रत धर्म निभाया।

यह सब देखकर राजा आश्चर्य से सोचने लगा– मेरे जैसे नीच प्राणी संसार में जीते और मरते हैं पर संसार में इनके समान न कोई हुआ है और न होगा।"

राजा ने दुःखी मन से सोचा कि मैं अब राज्य भोगकर क्या करुंगा! उसने भी अपना सिर काटने के लिए तलवार उठा ली।

तभी भगवती मां ने उसका हाथ पकड़ते हुए कहा, "पुत्र! मैं तुम पर प्रसन्न हूं, अब इस तरह सिर काटने की कोई जरुरत नहीं। तुम्हारे जीवन का अन्त हो जाने पर भी तुम्हारे राज्य का विनाश नहीं होगा।"

राजा ने देवी को साष्टांग प्रणाम करके कहा, "मुझे राज्य और अपने जीवन से कोई मोह नहीं रहा। यदि आप मुझ पर इतनी ही प्रसन्न हैं, तो मेरी शेष आयु वीरवर, उसकी पत्नी व पुत्र में बांट दीजिए। यदि आप ऐसा नहीं करेंगी, तो मैं इन्हीं की तरह प्राण त्याग दूंगा।"

राजा की बात सुनकर माता भगवती बोली, "मैं तुम्हारे साहस और सेवक के प्रति प्रेमभाव को देखकर प्रसन्न हूं। आयुष्मान भवः। वीरवर और उसका परिवार भी जीवित हो जाएगा।" इतना कहकर माता भगवती अन्तर्ध्यान हो गई।

राजा शुद्रक, मां भगवती को देखता ही रह गया। वह अकेला खड़ा चारों ओर रात के सन्नाटे में देखना चाह रहा था। कि शायद

यदि आप ज्योतिष एवं वास्तु सम्बन्धित किसी भी समस्या के समाधन की उचित सलाह चाहते हैं। लिखें या ईमेल करें–

ज्योतिष परामर्श शुल्क रु. 500/- वास्तु परामर्श शुल्क रु. 1100/- (मकान का नक्सा आवश्यक)

परामर्श शुल्क ड्राफ्ट/ मनीआर्डर द्वारा निम्न पते पर भेज सकते हैं या महेश चन्द शर्मा के एस. बी. आई, एस. एन. एम. सी. शाखा, आगरा, खाता न. **10039621088**, में जमा करा दे।

भविष्य दर्शन®
ज्योतिष, वास्तु शिक्षण संस्थान

देव देवी यहीं–कहीं छुप गयी हों, परन्तु ऐसा नहीं था, वहां उस समय जो कुछ हुआ था वह माता भगवती का करिश्मा था जिससे कि वीरवर, उसकी पत्नी व पुत्र–जीवित हो गये थे।

राजा ने शूरवीर के परिवार को जीवित होते देखा तो वह कांपने लगा और कांपता–कांपता मन्दिर के एक कोने में छिप गया। राज अपने आपको वीरवर से छुपाता रहा था–इसलिए वह अब भी नहीं चाहता था कि वह वीरवर के सामने आये।

राजा सारा दृश्य छुपकर ही देखता रहा।

जब वीरवर का परिवार जीवित हो गया तो वे सब अपने घर लौट आए। राजा भी उनसे छुपकर महल को लौट गया। घर आते–आते प्रातःकाल होने लगा था–राजा ने महल में जाकर पहले स्नान किया और फिर नाश्ता करने के दरबार में गया।

उधर वीरवर भी अपने घर पहुंचकर स्नान आदि से निपटकर दरबार में आया और अपने काम पर खड़ा हो गया।

महल के द्वार पर वीरवर ने राजा के पूछने पर बताया–"महाराज!विलाप करने वाली स्त्री मुझे देखकर अदृश्य हो गयी थी और कोई बात नहीं थी।"

वीरवर अपनी बात को गुप्त रखना चाहता था वह किसी से भी अपना राज नहीं बताा चाहता था। उसने राजा को भी इसीलिए कुछ हीं बताया था।

परन्तु राजा के मन में उसके प्रति और भी अधिक श्रद्धाभाव उत्पन्न हुआ। वह तो रात से ही वीरवर के सामने झुकने को तत्पर था, मगर उसका सम्मान उसके आड़े आ रहा था–राजा सोच रहा था यदि वह अपने एक सेवक के सामने झुका तो मेरा सम्मान मिट्टी में मिल जाएगा और प्रजा मेरा आदर नहीं करेगी, लेकिन प्रजा को क्या मालूम कि वीरवर कितना महान् व्यक्ति है– यह केवल राजा ही जानता था और किसी को क्या पता।

राजा ने वीरवर की बात सुनकर मन में सोचा–"इस महान् आत्मा की किस प्रकार प्रशंसा करे।" सच ही कहते हैं– "उदार मन के लोग मीठी वाणी बोलते हैं। बहादुर और बलिदानी अपनी प्रशंसा स्वयं नहीं करता है। दानी व्यक्ति कुपात्र को दान नहीं देते और तेजस्वी लोग कठोर होते हैं।" महापुरुषों के सभी लक्षण वीरवर में उपस्थित हैं। राजा वीरवर को देखकर अपने मन ही मन में कह रहा था–"वीरवर तू महान् है, मुझसे भी महान्.....।"

राजा ने विद्वान लोगों की एक सभा बुलायी और सबके सामने वीरवर की बहादुरी और धर्म के प्रति लगाव का रात वाला वृतान्त कह सुनाया। बाद में वीरवर को एक राज्य का अधिकारी बना दिया।

कथा सुनाकर हिरण्यगर्भ बोला,"अब बताओं कि आगन्तुक क्या जाति व स्वभाव के कारण दुष्ट होते हैं। मैं तो कहता हूं कि इनमें भी उत्तम, मध्यम और अधम लोग होते है।"

चकवा बोला, "महाराज!यह नहीं सोचना कि यदि कोई वस्तु किसी के पुण्य कर्म के बदल उसे मिल गई तो वह वस्तु मुझे भी मिल जाएगी। ऐसी बात सोचने वाला लोभी कहलाता है और उसका विनाश निश्चित है।

अधिक लोभ करने वाले एक नाई ने ऐसा ही किया था। तो उसे मृत्यु प्राप्त हुई थी।"

"यह कैसी कथा हैं?" हिरण्यगर्भ बोला।

चकवे ने कहा, "आपने कभी यह कथा नहीं सुनी?"

"नहीं।"

चकवा बोला–"सुनिए महाराज! मैं कथा कहता हूं–!"

शेष अगले क्रमांक में..... ❋❋❋

शेष पेज 7 से आगे.....

नियम है। अखिल ब्रह्माण्ड में यह विराजती है। वन और पर्वत इसकी शोभा बढ़ाये रहते हैं। यह सात समुद्रों से घिरी रहती है। सात द्वीप इसके अंग है। हिमालय और समेरु आदि पर्वत तथा सूर्य एवं चंद्रमा प्रभूति ग्रह इसे सदा सुशोभित करते हैं। महाविराट् की आज्ञा के अनुसार ब्रह्मा, विष्णु तथा शिव आदि देवता प्रकट होते एवं समस्त प्राणी इस पर रहते हैं। पुण्य तीर्थ तथा पवित्र भारतवर्ष–जैसे देशों से सम्पन्न होने का इसे सुअवसर मिलता है। यह पृथ्वी स्वर्णमय भूमि है। इस पर सात स्वर्ग है। इसके नीचे सात पाताल हैं। ऊपर ब्रह्मलोक है। ब्रह्मलोक से भी ऊपर ध्रुवलोक है।

नारद! इस प्रकार इस पृथ्वी पर अखिल विश्व का निर्माण हुआ है। ये निर्मित सभी विश्व नश्वर है। यहाँ तक कि प्राकृत–प्रलय का अवसर आने पर ब्रह्मा भी चले जाते हैं। उस समय केवल महाविराट् पुरुष विद्यमान रहते हैं। कारण, सृष्टि के आरम्भ में ही परब्रह्म श्री कृष्ण ने इन्हें प्रकट करके इस कार्य में नियुक्त कर दिया है। सृष्टि और प्रलय प्रवाह रुप से नित्य हैं– इनका क्रम निरन्तर चालू रहता है। ये समय पर नियन्त्रण रखने वाली अदृष्ट शक्ति के अधीन होकर रहते हैं। प्रवाह क्रम से पृथ्वी भी नित्य है। वाराह कल्प में यह मूर्तिमान् रुप से विराजमान हुई थी और देवताओं ने इसका पूजन किया था। मुनि, मनु गन्धर्व और ब्राह्मण– प्रायः सभी इसकी पूजा में सम्मिलित हुइ थे। उस समय भगवान् का वाराहावतार हुआ था। श्रुति के सम्मत से यह पृथ्वी उनकी पत्नी के रुप में विराजमान हुई। इससे मंगल का जन्म हुआ और मंगल से घटेश की उत्पत्ति हुई।

नारद ने पूछा– प्रभो! देवताओं ने वाराह कल्प में पृथ्वी की किस रुप से पूजा की थी? सब को आश्रय प्रदान करने वाली इस साध्वी देवीकी उस कल्प में सभी पूजा करते थे। यह मूल प्रकृति ही पंजीकरण मार्ग से प्रकट है। भगवन्! नीचे तथा ऊपर के लोकों में इसके विविध पूजन का प्रकार एवं मंगल के जन्म का कल्याणमय प्रसंग विस्तारपूर्वक बताने की कृपा कीजिये।

भगवान् नारायण कहते हैं– नारद! बहुत पहले की बात है। उस समय वाराहकल्प चल रहा था। ब्रह्मा के स्तुति करने पर

भगवान् श्री हरि हिरण्याक्ष को मारकर पृथ्वी को रसातल से निकाल ले आये। उसे जल पर इस प्रकार रख दिया मानो तालाब में कमल का पत्ता हो। उसी पर रहकर ब्रह्मा ने सम्पूर्ण मनोहर विश्व की रचना की। पृथ्वी की अधिष्ठात्री देवी एक परम सुन्दरी देवी के वेष में थी। उसे देखकर भगवान् श्री हरि के मन में प्रेम करने का विचार उत्पन्न हो गया। अतएव भगवान् ने अपना वाराहरुप बना लिया। उनकी कान्ति ऐसी थी।, मानो करोड़ों सूर्य हों। उनके प्रयास से परम सुन्दरी मूर्ति भलीभाँति रति के योग्य बन गयी। उस देवी के सथ दिव्य एक वर्ष तक वे एकान्त में रहे। फिर उन्होंने उस सुन्दरी देवी का संग छोड़ दिया। खेल–ही–खेल में वे अपने पूर्व वाराह रुप से विराजमान हो गये। उनके द्वारा परमसाध्वी देवी पृथ्वी का ध्यान और पूजन आरम्भ हो गया। धूप, दीप, नैवेद्य, सिन्दूर, चन्दन, वस्त्र, फूल और बलि आदि सामग्रियों से पूजा करके भगवान् ने उससे कहा।

श्री भगवान् बोले–शुभे! तुम सबको आश्रय प्रदान करने वाली बनो। मुनि, मनु, देवता, सिद्ध और दानव आदि सबसे सुपूजित होकर तुम सुख भोगोगी। अम्बुवाचीके (सौरमान से आर्द्रा नक्षत्र के प्रथम चरण में पृथ्वी ऋतुमती रहती है। इतने में समय का नाम अम्बुवाची है।) अतिरिक्त दिन में गृहप्रवेश, गृहारम्भ, वापी एवं तड़ाग के निर्माण अथवा अन्य गृह कार्य के अवसर पर देवता आदि सभी लोग मेरे वर के प्रभाव से तुम्हारी पूजा करेंगे। जो मूर्ख तुम्हारी पूजा नहीं करना चाहेंगे, उन्हें नरक में जाना पड़ेगा। उस समय पृथ्वी गर्भवती हो चुकी थी। उसी गर्भ से तेजस्वी मंगल नामक ग्रह की उत्पत्ति हुई। भगवान् के आज्ञानुसार उपस्थित सम्पूर्ण व्यक्ति पृथ्वी की उपासना करने लगे। कण्वशाखा में कहे हुए मन्त्रों को पढ़कर उन्होंने ध्यान किया और स्तुति की। मूल मंत्र पढकर नैवेद्य अर्पण किया। यो त्रिलो की भर में पृथ्वी की पूजा और स्तुति होने लगी।

नारदजी ने कहा– पृथ्वी का किस प्रकार ध्यान किया जाता हैं, इनकी पूजा का प्रकार क्या है और कौन मूल मंत्र है? सम्पूर्ण पुराणों में छिपे हुए इस प्रसंग को सुनने के लिये मेरे मन में बड़ा कौतूहल हो रहा है। अतः बताने की कृपा कीजिये।

भगवान् नारायण कहते हैं– मुने! सर्वप्रथम भगवान् वाराह ने इस पृथ्वी की पूजा की। उनके पश्चात् ब्रह्मा उसके पूजन मे संलग्न हुए। तदनन्तर सम्पूर्ण प्रदान मुनियों, मनुओं और मानवोंद्वारा इसका सम्मान हुआ। नारद! अब मैं इसका ध्यान, पूजन और मंत्र बतलाता हूँ, सुनो। **'ऊँ ह्रीं श्रीं वसुधायै स्वाहा'** इसी मन्त्र से भगवान् विष्णु ने इसका पूजन किया था। ध्यान का प्रकार यह है– 'पृथ्वी देवी के श्रीविग्रह का वर्ण स्वच्छ कमल के समान उज्ज्वल है। मुख ऐसा जान पड़ता है, मानो शरत्पूर्णिमा चन्द्रमा हो। सम्पूर्ण अंगों से ये चन्दन लगाये रहती हैं। रत्नमय अलंकारों से इनकी अनुमप शोभा होती है। समस्त रत्न इनके ऊपर तथा अंदर भी विद्यमान हैं। रत्नों की खानें इनको गौरवान्वित किये हुए है। ये विशुद्ध चिन्मय वस्त्र धारण किये रहती है। इनके मुखमण्डल पर मुसकान छायी है। सभी लोग इनकी उपासना करते हैं। ऐसी भगवती पृथ्वी की मैं आराधना करता हूँ।' इसी प्रकार ध्यान करके सब लोगों ने पृथ्वी की पूजा की। विप्रेन्द्र! अब कण्वशाखा में प्रतिपादित इनकी स्तुति सुनो।

वहाँ श्री नारायणने कहा है– भगवती जये! तुम जल की आधार हो। तुम्हारे अंदर जल का रहना स्वाभाविक गुण है। तुम सब को जल प्रदान करती हो। भगवान् श्री हरि यज्ञावाराहरुप से पधारे थे और तुम उनकी पत्नी बनी थी। तुम विजयसमन्न, मंगलमयी, मंगल का आश्रय तथा मंगल प्रदा हो। देवी! मुझे जय देने की कृपा करो। भवे! मंगललेशे! मैं मंगल प्राप्ति के लिये तुम से प्रार्थना करता हूँ। अतः कृपया मुझे मंगल–प्रदान करो। सबको आश्रय देनेवाली देवी! तुम सर्वज्ञा एवं सर्वशक्तिसमन्विता हो। सबकी अभिलाषा पूर्ण करने वाली भगवती भवे! तुम मेरा सम्पूर्ण अभीष्ट कार्य सम्पन्न कर दो। तुम्हारा विग्रह पुण्यमय है। तुम पुण्यों की बीज हो। तुम्हें भगवती सनातनी कहा जाता है। भवे! तुम पुण्याश्रया, पुण्यों की आस्पद तथा पुण्यप्रदा हो। सम्पूर्ण शस्यों को उत्पन्न करने वाली देवी! सभी फसलें तुम पर निपजती हैं। सभी खेतियाँ तुम्हारे ही भीतर लीन भी हो जाती हैं। भवे! तुम्हारा सर्वांग ही शस्यमय है। भूमे! तुम राजाओं की सर्वस्व हो। राजा लोग सदा तुम्हारा सम्मान करते हैं। राजाओं को सुखी बनाने वाली भगवती भूमिदे! तुम मुझे भूमि देने की कृपा करो।

श्री नारायण उवाच

यज्ञसूकरजाये च जयं देहि जयावहे।
मंगले मंगलाधारे मांगल्ये मंगलप्रदे।।
मंगलार्थ मंगलेशे मंगलं देहि में भवे।
सर्वाधारे च सर्वज्ञे सर्वशक्तिसमन्विते।।
सर्वकामप्रदे देवि सर्वेष्टं देहि में भवे।
पुण्यस्वरुपे पुण्यानां बीजरुपे सनातनि।।
पुण्याश्रये पुण्यवतामालये पुण्यदे भवे।
सर्वेशस्यालये सर्वशस्याढये सर्वशस्यदे।।
सर्वशस्यहरे काले सर्वस्यात्मिके भवे।
भूमे भूमिपसर्वस्वे भूमिपालपरायणे।।
भूमिपानां भूमिं देहि च भूमिदे।

नारद। यह स्तोत्र परम पवित्र है। जो पुरुष प्रातः काल इसका पाठ करता है, उसे बलवान् राजा होने का सौभाग्य अनेक जन्मों के लिये पाया होता है। इसे पढ़ने से मनुष्य पृथ्वी के दान से उत्पन्न पुण्य के अधिकारी बन जाते है। पृथ्वी–दान के अपहरण से, दूसरे के कुएँ को बिना उसकी आज्ञा लिये खोदने से, अम्बुवाची योग में पृथ्वी को खनने से, दूसरे की भूमिका अपहरण करने से जो पाप होते है, उन पापों का उच्छेद करने के लिये यह परम उपयोगी है। मुने! पृथ्वी पर वीर्य त्यागने तथा दीपक रखने से जो पाप होता है, उससे भी पुरुष इस स्तोत्र का पाठ करने से मुक्त हो जाता है।

नारदजी बोले–भगवन्! पृथ्वी का दान करने से जो पुण्य तथा उसे छीनने, दूसरे की भूमिका हरण करने, अम्बुवाची में पृथ्वी का उपयोग करने, भूमि पर वीर्य गिराने तथा जमीन पर दीपक रखने से जो पाप बनता है, उसे मैं सुनना चाहता हूँ। वेदवेत्ताओं में श्रेष्ठ प्रभो! मेरे पूछने के अतिरिक्त अन्य भी जो पृथ्वी–जन्य पाप हैं, उनको, उनके प्रतीकारसहित बताने की कृपा करें।

भगवान् नारायण कहते हैं–मुने! जो पुरुष किसी संध्यापूत ब्राह्मण को एक विश्वमात्र भी भूमि दान करता है, वह भगवान् शिव के मन्दिर–निर्माण के पुण्य का भागी बन जाता है। फसलों से भरी–पूरी भूमि को ब्राह्मण के लिये अर्पण करने वाला सत्पुरुष उतने ही वर्षो तक भगवान् विष्णु के धाम में विराजता है, जितने उस जमीन के रजःकरण हों। जो गाँव, भूमि और धान्य ब्राह्मण को देता है, उसके पुण्य से दाता और प्रतिगृहीता–दोनों व्यक्ति सम्पूर्ण पापों से छूटकर भगवती जगदम्वा के लोक में स्थान पाते हैं। जो परोपकारी पुरुष भूमिदान के अवसर पर दाता को उत्साहित करता है, उसे अपने मित्र एवं गोत्र के साथ वैकुण्ठ में जाने की सुविधा प्राप्त होती है।

अपनी अथवा दूसरे की दी हुई ब्राह्मण की भूमि हरण करने वाला व्यक्ति सूर्य एवं चन्द्रमा की स्थिति पर्यन्त 'कालसूत्र' नामक नरक में स्थान पाता है। इतना ही नहीं, किंतु इस पाप के प्रभाव से उसके पुत्र और पौत्र आदि के पास भी पृथ्वी नहीं ठहरती। वह श्रीहीन, पुत्रहीन और दरिद्र हाकेर घोर रौरव नरकका अधिकारी बनता है। जो गोचरभूमिको जोतकर धान्य उपार्जन करता है और वही धान्य ब्राह्मण को देता है, तो इस निन्दित कर्म के प्रभाव से उसे देवताओं के वर्ष से सौ वर्ष तक 'कुम्भीपाक' नामक नरक में रहना पड़ता है। गौओं के रहने के स्थान, तड़ाग तथा रास्ते को जोतकर पैदा किये हुए अन्ना का दान करने वाला मानव चौदह इन्द्र की आयु तक 'असिपत्र' नामक नरक में रहता है। जो कामान्ध व्यक्ति उकान्त में पृथ्वी पर वीर्य गिराता, उसे वहाँ की जमीन में जितने रजःकण है, उतने वर्षो तक 'रौवरव' नरक में रहना पड़ता है। अम्बुवाची में भूमि खोदने वाला मानव 'कृमिदंश' नामक नरक में जाता और उसे वहाँ चार युगों तक रहना पड़ता है। जो दूसरे के तड़ाग में पड़ी हुई कीचड़ को निकाल कर शुद्ध जल होने पर स्नान करता है, उसे ब्रह्मलोक में स्थान मिलता है। जो मन्द–बुद्धि मानव भूमि पति के पितरों को श्राद्ध में पिण्ड न देकर श्राद्ध करता है, उसे अवश्य ही नरकगामी होना पड़ता है। शिवलिंग, भगवती की मूर्ति, शंख, यन्त्र, शालिग्राम का जल, फूल, तुलसीदल, जपमाला, पुष्पमाला, कपूर, गोरोचन, चन्दन की लकड़ी, रुद्राक्ष की माला, कुश की जड़ पुस्तक और यज्ञोपवीत– इन वस्तुओं को भूमि पर रखने से मानव नरक में वास करता है। गाँठ में बँधे हुए यज्ञ सूत्र की पूजा करना सभी द्विजाति वर्णों के लिये अत्यावश्यक है। भूकम्प एवं ग्रहण के अवसर पर पृथ्वी को खोदने से बड़ा पाप लगता है। इस मर्यादा का उल्लघंन करने से दूसरे जन्म में अगंहीन होना पड़ता है। इस पर सब के भवन बने हैं, इसलिये यह 'भूमि' कहलाती है। कश्यप की पुत्री होने से 'काश्यपी' तथा स्थिररुप होने से 'स्थिरा कही जाती है। महामुने! विश्व को धारण करने से 'विश्वम्भरा, अनन्त रुप होने से 'अनन्ता' तथा पृथु की कन्या होने से अथवा सर्वत्र फैली रहने से इसका नाम 'पृथ्वी' पड़ा है।

❋❋❋

शेष पेज 4 से आगे.....

यह प्रयोग यथासंभव गोपनीय रखना चाहिए।

7. शत्रु बाधा निवारण हेतु–यदि कोई व्यक्ति आपको निरंतर शत्रु भाव के कारण परेशान कर रहा हो तो उस व्यक्ति की शत्रुता दूर करने के लिए होलिका दहन की दूसरी रात्रि में रात्रि 12 बजे के बाद अनार की कलम से होली की राख में शत्रु का नाम लिखकर उसे बांएँ हाथ से मिटा दें तथा पुनः उसी स्थान पर निम्नलिखित यंत्र बनाएँ। यंत्र बनाने के उपरांत कुछ राख लेकर वापस आ जाएं। उस राख को शत्रु के सिर पर डालने से उसकी शत्रुता समाप्त हो जाएगी।

8. विद्या-बुद्धि प्राप्ति हेतु–जिन बच्चों अथवा छात्रों की अध्ययन के प्रति एकाग्रता कम हो एवं शिक्षा में बार–बार रुकावटें एवं व्यवधान आते हों तो ऐसे छात्रों को इन व्यवधानों को दूर कर शिक्षा में एकाग्रता एवं सफलता हेतु होली की रात्रि में निम्नलिखित प्रयोग करना चाहिए।

होलिका दहन से पूर्व सात साबुत सुपारी एवं सात साबुत पान लेकर होलिका की सात परिक्रमा लगानी चाहिए। प्रत्येक परिक्रमा पूर्ण होने पर एक पान एवु सुपारी होलिका में डाल देनी चाहिए। अंत में थोड़ा सा हरे रंग का गुलाल भूमि पर छिड़क कर उस पर निम्नलिखित यंत्र चंदन की लकड़ी से बनाना चाहिए।

9. स्वास्थ्य लाभ हेतु–जिन व्यक्तियों को स्वास्थ्य से संबंधित परेशानीयाँ होती रहती हों उन्हें स्वास्थ्य लाभ हेतु निम्न प्रयोग करना चाहिए। होलिका दहन के समय होली की ग्यारह परिक्रमा लगाते हुए मन ही मन अपनें गुरु मंत्र का जप करना चाहिए तथा होली के बाद भी प्रातः काल मंत्र का 108 बार जप अवश्य करना चाहिए।

10. नौकरी प्राप्ति हेतु– भटक रहे बेरोजगार युवाओं के लिए एक प्रभावशाली प्रयोग बताया जा रहा है। जो व्यक्ति नौकरी के अभिलाषी हों, उन्हें होली की रात्रि में काले तिल के 21 दाने दाहिने हाथ में लेकर होलिका दहन से पूर्व आठ परिक्रमा लगानी चाहिए। परिक्रमा लगाते समय निम्नलिखित मंत्र का मानसिक जप करते रहना चाहिए। जब परिक्रमा पूर्ण हो जाए, तो काले तिलों को चाँदी के ताबीज में भरकर होली की रात्रि में ही गले में धारण कर लें। ऐसा करने से शीघ्र ही नौकरी प्राप्ति में आ रहे व्यावधान दूर होते हैं। यदि किसी इंटरव्यू में जाना हो, तो भी यह ताबीज पहन कर जाएं।

❋❋❋

शेष पेज 6 से आगे.....

क्यों होता है विवाह के समय वर-कन्या का गठबन्धन (गठ जोड)- विवाह संस्कार का प्रतीक रूप गठबंधन है। विवाह में फेरे लेते समय वर के कंधे पर सफेद या गुलाबी दुपट्टा रखकर वधू की साड़ी के पल्लू से बाँधा जाता है जिसका अर्थ है कि दोनों एक-दूसरे से जीवन भर के लिये बँध गये। गठबंधन के समय पल्ले में सिक्का, हल्दी, पुष्प, दुर्वा और अक्षत रखकर गाँठ बाँधी जाती है जिसका अर्थ है पुष्प की तरह दोनों जीवन भर एक दूसरे को खुशियाँ बाँटो। हल्दी आरोग्यता का प्रतीक है। दुर्वा सदैव हरे भरे रहने का संदेश देती है कि नव दम्पत्ति जीवन भर कभी न मुरझाऐ। अक्षत (चावल) अन्नपूर्णा का प्रतीक है कि घर में अन्न का भंडार भरा रहे जिससे परिवार के लोग भूखे न रहे तथा जो भी अन्न कमाऐ उसे अकेले नही बल्कि मिलजुलकर खाऐ।

विवाह में अग्नि की परिक्रमा क्यों करते है- कभी-कभी मन में विचार आता है कि वर-वधू अग्नि के चारों तरफ ही फेरे क्यों लेते है? जल का घड़ा रखकर उसका चक्कर भी तो लगाया जा सकता है। इस विषय में विद्वानों का मत है कि जल कितना भी शुद्ध क्या न हो खुले स्थान पर रखते ही प्रदूषित हो जाता है क्योंकि वायुमण्डल में उपस्थित जीवाणु उसमें प्रवेश कर जाते है परंतु अग्नि सदैव पवित्र व शुद्ध रहेगी क्योंकि अपनी दाहकता से वह हर वस्तु को शुद्ध बना देती है तो वह कैसे अशुद्ध हो सकती है। इसलिये वर-वधु अग्नि को साक्षी मानकर सात बार परिक्रमा करते है, धार्मिक दृष्टि से इसका अर्थ है कि हम दोनों एक दूसरे को सात जन्म के लिये वरण करते है।

विवाह के फेरे लेते समय वधू आगे क्यों रहती है?- स्वयं देवताओं ने स्त्री को प्रथम स्थान प्रदान किया है, नारी शक्ति सदैव आगे पूज्य रही है। देवताओं का नाम जाप करते समय भी जोड़े से नाम इस तरह जैसे- राधाकृष्ण, सीताराम, गौरीशंकर, लक्ष्मीनारायण, सिद्धिविनायक आदि। जब देवता नारी को अग्रणी मानते है तो हमें भी मानना चाहिये इसी कारण इस परम्परा को आगे चलाते हुये विवाह में वधू आगे चलती है तथा वर उसके पीछे।

माँग भरने के पीछे क्या भाव है?- भरी माँग कन्या के अखण्ड सुहाग की निशानी होती है। इसके अलावा यह भी संकेत देती है कि पति का प्रेम और सुरक्षा उसके साथ है इसलिये कोई अन्य व्यक्ति उस पर कुदृष्टि न डाले।

क्यों लिये जाते है सात फेरे?- सात फेरे अग्नि को साक्षी मानकर वर-वधू अपने नव जीवन को सुखी व समृद्ध दाम्पत्य जीवन की कामना के लिये लेते है।

पहला फेरा- भोजन और जीवन में अन्य जरूरतों के लिये भगवान से जीवन के सही माग्र पर चलने की प्रेरणा के लिये। **दूसरा फेरा-** शक्ति, पराक्रम और साम्थर्य के लिये। **तीसरा फेरा-** धन सम्पत्ति और वैभव के लिये। **चौथा फेरा-** परिवार में सुख और कर्तव्य पथ पर आगे बढ़ते रहने के लिये। **पाचँवा फेरा-** सर्वगुण सम्पन्न संतान के लिये। **छठा फेरा-** छह ऋतुओं और समय के अनुरूप आचरण या कार्य करने एवं लम्बी उम्र के लिये। **सातँवा फेरा-** समान धर्म में विश्वास और जीवन भर की मित्रता के नाम पर।

सात वचनों का क्या महत्व है?- सात फेरे लेने के बाद पुरोहित वर-वधू को सात वचनों की शपथ दिलाते है जिसमें दोनों एक-दूसरे से वचन लेते है जिसमें

पहला वचन- तीर्थ, व्रत, यज्ञ दान व धार्मिक कर्मों में यदि मुझे साथ रखेगे तो मैं आपकी वामंगी बनने को तैयार हूँ। **दूसरा वचन-** देवताओं और पित्तरों के नियन्त्रण जो भी पूजा, दान करेगे उसमें मुझे अपने साथ रखेगें। **तीसरा वचन-** कुटुम्ब, परिवार की रक्षा, भरण-पोषण, पशुओं की देख-भाल का दायित्व आपका होगा। **चौथ वचन-** धन के आय-व्यय के सम्बन्ध में मेरी सलाह लेनी होगी। **पाचवाँ वचन-** आप यदि मंदिर, धर्मशाला, कुआँ आदि का निर्माण कराएगें तो उसमें मुझे भी साथ रखना होगा। **छठाँ वचन-** देश, विदेश में किसी भी प्रकार की सम्पत्ति का क्रय-विक्रय आदि करने से पहले मेरी सहमति अवश्य लेंगें। **सातंवा वचन-** आप किसी पराई स्त्री के साथ अनावश्यक व अनैतिक व्यवहार नही रखेगे और मुझे अपनी अर्द्धागिनी का पूर्ण सम्मान देगे।

अंत में वर कन्या से वचन लेता है कि तुम्हे अपने चित्त को मेरे चित्त से मिलाना होगा और हमेशा मेरी आज्ञा का पालन करना होगा मेरे परिवार के सदस्यों को तथा आगुन्तको को उचित सम्मान देना होगा। मेरी बिना आज्ञा के मायके की दहलीजपर नही जाना है, मेरी उन्नति के लिये प्रत्यनशील रहना होगा। इस तरह ये सातो वचन पूर्ण होते है।

भाई द्वारा खील क्यों दी जाती है?- ऐसा इसलिये किया जाता है ताकि कन्या यह न सोचे कि वह और भाई एक ही कुल में पैदा हुये परंतु पिता ने उसे दूसरे कुल भेजकर पराया कर दिया, भाई के द्वारा खील दिलाई जाती हैं खील धान से बनती है। धान को एक जगह बोया जाता है और फलते-फूलने के लिये दूसरी जगह उसकी रोपाई की जाती है। उसके बाद ही धान फलते-फूलते है। उसी तरह कन्या भी पिता के घर में रहकर वंशवृद्धि नही कर सकती। भाई अपना स्नेह प्रकट करता हुआ बहिन को आश्वासन देता है कि वह पिता के घर आने-जाने का पूरा अधिकार रखती है। इस प्रकार इन रस्मों में पवित्रता का भाव छिपा है जो वर-वधू के नव दाम्पत्य जीवन के लिये आवश्यक है। ❋❋❋

शेष पेज 9 से आगे.....

जैसी स्थिति नहीं दर्शा रहीं। मेरा मानना है– 21दिसम्बर 2012 में प्रलय की सम्भावना को लेकर मेने जो अध्ययन किया उसमें उस दिन की गृह स्थिति प्रलय या विनाशकारी नहीं है।

ज्योतिष के अन्तर्गत सभी ग्रहों की स्थिति मानव के प्रति प्रतिकूल नहीं हैं। या ऐसा कोई योग नहीं हैं जिसमें प्रलय की सम्भावना नजर आये। मेरा मानना हैं कि प्रलय आने की जो सम्भावना वयक्त की जा रही हैं उसका एक कारण फ्रांसीसी भविष्यवक्ता नास्त्रोदमस् की भविष्यवाणी हैं उन्होने धरती के खत्म होने की भविष्यवाणी की हैं। पर ये जरूरी नहीं कि सारी ही भविष्यवाणियां उनकी सही गयीं हो। हमारा देश कितने ही समय से प्राकृतिक आपदा, भूकम्प, ज्वालामुखी, ग्लोबल वार्मिग, अकाल

और भंयकर आतंकवाद से जूझ रहा हैं। पर इसका जिक्र कभी भी–कहीं भी नहीं मिला। या किसी शास्त्र या ग्रंथ में इस तरह की प्रलय की कोई सही गणना नहीं मिली हैं जो इस सत्यता को प्रमाणित कर सके। तो फिर 21 दिसम्बर 2012 चर्चा में क्यों हैं। जिसमें मन में वहम पैदा किया है और कुछ नहीं। स्पष्ट रूप से कहा जाये तो 2012 में होने वाली उथल–पुथल एक सामान्य घटना हैं और कुछ नहीं। यह सिर्फ भ्रम है हकीकत नहीं। इसलिए अफवाओं पर ध्यान मत दीजिये। नव वर्ष का खुलकर स्वागत करें–नववर्ष 2012 को हंसी–खुशी उल्लास के साथ मनायें। अपनी सोच को सकारत्मक रखें। ❋❋❋

शेष पेज 9 से आगे.....

और एक दूसरे के पूरक है पुरात युग धर्म प्रधान युग था। और वर्तमान युग अर्थ प्रधान युग है।

ऐसा नहीं है कि पुरातन युग में अर्थ की आवश्यकता नहीं थी, आवश्यकता तो उस समय भी थी किन्तु लोगों की भावनाओं में प्रधानता धर्म की थी। युग बदला, आवश्यकताएँ बदली और मान्यताएँ भी बदल गई, आज मानव जीवन का केन्द्र बिन्दू अर्थ हो गया और शेष तीनों पुरूषार्थ अर्थ पर ही आधारित हो गये।

आज व्यक्ति की सर्वप्रथम आवश्यकता ही आर्थिक दृष्टि से सम्पन्न होता है, उसके पास धन का न होना, सुखद जीवन का अंत ही माना जाता है। यह पर्व लक्ष्मी–विष्णु की आराधना का विशेष पर्व है। शास्त्रों में भी कहा गया हैं लक्ष्मी विष्णु के साथ हमारे घर में स्थायी रुप से निवास करें।

इसका भी एक कारण है, जिस तरह सामाजिक व्यवस्था को संतुलित बनाये रखने के लिए धर्म–अर्थ–काम–मोक्ष इन चार पुरुषार्थो की आवश्यकता है और एक दूसरे के पूरक भी है। इसी तरह विष्णु के साथ लक्ष्मी आती है तो आदरणीय, सौम्य रुप में आती है वरना लक्ष्मी तो चंचला है।

सामान्यतया भगवान विष्णु की पूजा में अक्षत निषेद्ध है। लेकिन इस दिन भगवान विष्णु की अक्षत द्वारा पूजा की जाती है, भगवान् विष्णु की पूजा में अन्यत्र सफेद तिल का विधान है।

आज का युग अर्थ में सिमट कर रह गया है। वहीं पुरातन काल से हमारी संस्कृति धर्मप्रधान रही है। अर्थ की आवश्यकता तो उस समय भी थी, लेकिन अर्थ का स्थान धर्म के बाद था। युग बदला आवश्यकताएं बदली औश्र मान्यताएँ भी बदल गई, आज मानव जीवन का केन्द्र बिंदू अर्थ हो गया और शेष तीनों पुरुषार्थो अर्थ पर आधारित हो गयें। न तो माता का स्वरुप जगत जननी जैसा प्रतीत होता है न पुत्र का श्रवण जैसा। सारे रिश्ते 'अर्थ से बंधे हैं। आज व्यक्ति की सर्वप्रथम आवश्यकता ही आर्थिक दृष्टि से सम्पन्न होना है, उसके पास धन का न होना सुखी जीवन का अंत ही माना जाता है।

लक्ष्मी तंत्र में बताया गया है कि स्वयं कुबेर ने इस साधना के माध्यय से लक्ष्मी को अनुकूल बनाया था व महर्षि विश्वामित्र ने इसी लक्ष्मी साधना से उन्हें पूर्ण रुप से प्रकट किया। यही वजह है कि जीवन पर्यन्त लक्ष्मी ने उनके आश्रम में वास किया।

यों तो लक्ष्मी से संबंधित से संबंधित कई सिद्धिकाल में की जाती है। इन विशेष काल में की गई साधनाएँ अवश्य ही पूर्ण होती हैं। लेकिन कभी हमारे पूर्वजन्माक्रत पाप व कभी–कभी छोटी–छोटी चूक हो जाने से साधना में सफलता प्राप्त नहीं होती, कभी तो संस्कृत का अपूर्ण ज्ञान, तो कभी दीक्षित शिष्य न होने के कारण तो कभी पूजा पद्धति से अनभिज्ञ होने के कारण तो कभी पूजा पद्धति से अनभिज्ञ होने के कारण साथक को कई छोटी–बड़ी परेशानी का सामा करना होता है।

लेकिन इस पर्व पर की जाने वाली समस्त साधनाएँ, हवन, जप, दान कई गुणा बढ़कर प्रतिफल के रुप मे मनुष्य को प्राप्त होते हैं। स्वयं गोरखनाथ जी ने एक स्थान पर कहा है। भले ही अन्य सारे प्रयोग असफल हो जाये, भले ही साधक नया हो, भले ही उसे स्पष्ट मंत्रों का उच्चारण ज्ञान न हो, परन्तु अक्षय तृतिया के अवसर पर इनको सफलता अवश्य मिलती है। इस पर्व की पूर्णता के बारे में स्पष्ट करते हु यहाँ तक कहा गया है कि कोई अभागा ही होगा जो इस अवसर को गंवायेगा। जिसके भाग्य में दरिद्रता ही लिखी हुई हो, वही ऐस अवसर चूकेगा। अतः इस मुहूर्त का उपयोग करके व्यक्ति अपने दरिद्रता, अभाव, परेशानियों को हमेशा के लिए अपने से कोसों दूर भगा सकता है और उसके स्थान पर सुख–समृद्धि, ऐश्वर्य उन्नति को प्राप्त करता है। ❋❋❋

शेष पेज 8 से आगे.....

16. दर्पण को मनमाने आकार में कटवाकर उपयोग में न लाएँ।

17. मकान का कोइ हिस्सा असामान्य शेप का या अंधकारयुक्त हो तो वहाँ गोल दर्पण रखे।

18. यदि घर के बारह इलेक्ट्रिक पोल, ऊँची इमारतें, आवांछित पेड़ या नुकीले उभार है और आप उनका दबाव महसूस कर रहे हैं तो उनकी तरफ उत्तल दर्पण रखें।

19. किसी भी दीवार में आईना लगाते वक्त इस बात का ध्यान रखें कि वह न एकदम नीचे हो और न ही अधिक ऊपर अन्यथा परिवार के सदस्यों को सिर दर्द हो सकता है।

20. यदि बेड़रुम के ठीक बिस्तर के सामने दर्पण लगा रखा है तो उसे फौरन हटा दें। यहाँ दर्पण की उपस्थिति वैवाहिक और पारस्परिक प्रेम को तबाह कर सकती है।

21. मकान में ईशान कोण में उत्तर या पूर्व की दीवार पर स्थित वॉश बेसिन के ऊपर दर्पण भी लगाएँ यह शुभ फलदायक है।

यदि आपके घर के दरवाजे तक सीधी सड़क आने के कारण द्वार वेध हो रहा है और दरवाजा हटाना संभव नहीं है तो दरवाजे पर पाकुआ दर्पण लगा दें। यह बेहद शक्तिशाली वास्तु प्रतीक है। अतः इसे लगाने में सावधानी रखना चाहिए। इसे किसी पड़ोसी के घर की ओर केंद्रित करके न लगाएँ। वास्तु शास्त्र में दर्पण यानी आईना को उत्प्रेरक बताया गया है जिसके द्वारा भवन में तरंगित ऊर्जा की सृष्टि सुखद अहसास कराती है। इसका उचित उपयोग कर हम अपने लाभदायक उपलब्धियाँ अर्जित कर सकते हैं। इस प्रकार हम देखते है कि फेंगशुई और वास्तु शास्त्र में भिन्नता होते हुए भी अनेक समानताये है फेंगशुई के सिद्धांतों को भारतीय परिवेश के अनुसार प्रयोग कर आप समुचित लाभ प्राप्त कर सकते हैं। ❋❋❋

शेष पेज 11 **से आगे.....**

2. सप्तमेश पंचमेश से युति करते हुए अष्टम, लगन एकादश, द्वितीय, तृतीय अथवा सप्तम भाव में स्थित हो एवं इस युति का संबंध मंगल या तृतीयेश से हो रहा हो, तो जातक के प्रेम विवाह का योग बनता है।

3. चंद्रमा सप्तम भाव में बली स्थिति में हो तथा उसका शुक्र, लाभेश, तृतीयेश अथवा पंचमेश में से किन्हीं दो ग्रहों से संबंध बन रहा हो, तो जातक का प्रेम विवाह संभव है।

4. यदि सप्तम या पंचम भाव में शुक्र बली होकर मंगल या सप्तमेश से युति करता हो, तो जातक का प्रेम विवाह संभव है। ऐसा विवाह बेमेल भी हो सकता है, जैसे दोनों में आयु का अंतर अधिक हो अथवा दोनों की जातियों में काफी अंतर हो।

5. शुक्र, चंद्र, मंगल युति करते हुए लग्न, सप्तम या पंचम भाव में स्थित हों तथा तृतीयेश से इस युति का संबंध हो जाए, तो यह योग प्रेम विवाह की संभावनाओं को बढ़ाता है।

6. सप्तमेश केतु से युति करते हुए लग्न, सप्तम अथवा पंचम में स्थित हो एवं इस युति का मंगल, शुक्र या चंद्र में से किसी एक ग्रह से संबंध हो जाए, तो यह योग प्रेम विवाह की संभावनाओं को बढ़ाता है।

7. किसी जातक की जन्मपत्री में पंचमेश, सप्तमेश युति करते हुए मंगल या तृतीयेश के साथ द्वितीय भाव में स्थित हो तथा उस युति पर किसी पाप ग्रह की दृष्टि ना हो, तो उस जातक का प्रेम विवाह संभव है। यही स्थिति यदि जातिका की जन्मपत्री में अष्टम भाव में न रही हो, तो उसका भी प्रेम विवाह संभव है।

8. सप्तम, अष्टम, लाभ, लग्न, द्वितीय एवं पंचम भावों तथा उनके भावेशों में परस्पर संबंध बन रहा हो, तो यह स्थिति प्रेम विवाह को दर्शाती है।

9. यदि उपर्युक्त सभी परिस्थितियों का सम्बन्ध राहु, शनि षष्ठेश अथवा द्वादशेश से हो जाए, तो यह योग प्रेम विवाह की असफलता को दर्शाते हैं।

10. यदि जन्मपत्रिका में शुक्र, एवं मंगल अथवा चंद्रमा मे से किन्हीं दो ग्रहों का सम्बन्ध सप्तम भाव से हो रहा हो तथा ये ग्रह बली अवस्था में होकर पाप ग्रहों से युति करते हों, तो विवाह उपरान्त भी प्रेम विवाह संभव है।

11. प्रेम विवाह की सफलता असफलता जानने के लिए सप्तम–सप्तमेश, अष्टम–अष्टमेश, द्वादश–द्वादशेश अथवा द्वितीय–द्वितीयेश की स्थितियों का अध्ययन करना चाहिए।

12. शुक्र–मंगल, शुक्र–चंद्र, सप्तमेश–शुक्र–मंगल आदि युतियों में यदि शुक्र परमबली होकर बली नीच, अथवा कर्क राशि में स्थित हो, तो प्रेम विवाह सफल नहीं हो पाता है, क्योंकि ऐसा जातक विवाह उपरांत भी अन्यत्र संबंध बना सकता है।

13. उपर्युक्त योगों के होने के बाद भी प्रेम विवाह तभी संभव है जब 18 वर्ष से 35 वर्ष की आयु के मध्य, पंचमेश, सप्तमेश, अष्टमेश, द्वादशेश, शुक्र अथवा मंगल की महादशा, अन्तर्दशा तथा प्रत्यन्तर्दशा आ जाए तथा गोचर एवं अष्टक, वर्ग में भी इन ग्रहों की स्थिति बली हो।

14. शुक्र की मीन तथा धनु राशि में स्थिति बेमेल विवाह की प्रतीक होती है, यदि इस स्थिति में शुक्र के साथ मंगल या राहु युति बना लें, तो वैवाहिक जीवन मे कटुता आ सकती है।

15. शनि की धनु एवं मीन राशि में स्थिति प्रेम विवाह के योगों को कम करती है।

16. राहु का पंचम भाव में स्थित होना अथवा पंचमेश या सप्तमेश से युति करना, प्रेम विवाह की क्रियान्विति में अवरोधक है।

17. पंचम भाव में बली गुरु एवं सूर्य की स्थिति प्रेम विवाह के योगों को कम करती है।

18. प्रेम विवाह से पूर्व मंगली विचार भी अवश्य कर लेना चाहिए नहीं तो विवाह पश्चात् कई प्रकार की कठिनाईयाँ हो सकती है।

❋❋❋

शेष पेज 11 **से आगे.....**

रहे हैं कि **धर्म को किसी सम्प्रदाय की आँख से कभी मत देखना ।**

वैदिकमन्त्रों के शब्द नित्य और नित नवीन हैं। उनमें जो ज्ञान भरा हुआ है, वह कभी भी नष्ट नहीं हो सकता, इन मंत्रों में मानव मात्र के कल्याणार्थ भोग और मोक्ष दोनों का कर्त्तव्य बोध निहित है–इसलिए वैदिक आदेशों के अनुसार कर्त्तव्य करना ही धर्म है। तीनों प्रकार के दुःखों (आध्यात्मिक, आधिभौतिक और आधिदैविक) की निवृत्ति ही पुरुषार्थ है। भोगों की प्राप्ति और मोक्ष की उपलब्धि, कर्म करने से ही सम्भव है। पूर्ण मनोयोग से कर्म करेंगे, तो सफलता मिलेगी ही ऐसा विश्वास रखने वाले व्यक्ति ही फल के भागीदार बन सकते हैं।

लोक में तीन काल हैं– भूत, भविष्य और वर्तमान, भूत जो बीत चुका है, भविष्य जो आने वाला है और वर्तमान जो चल रहा हैं। मन का लगाव वर्तमान के साथ कम रहता है। वह अतीत की सोचता है अथवा भविष्य की। अतीत जा चुका होता है, इसलिए वह भी अधिक चिन्ता का विषय नहीं होता। उस पर विशेष ध्यान तो तभी रहता है, जब कि जो कुछ भोगा है, वह अधिक सुखद रहा हो। अन्यथा भविष्य की चिन्ता सताती है, तो मन लम्बी छलाँग लगाता है और कितने ही हवाई महल खडे कर लेता है। किन्तु वर्तमान पर उसका ध्यान बहुत कम रहता है–सोचता है कि जो कुछ चल रहा है, उसे चलने दो। यदि मनुष्य यह सोच ले कि वर्तमान को सवाँर लिया जाये क्योंकि **वर्तमान ही भविष्य की आधार शिला है, तो जीवन का मार्ग** प्रकाश युक्त हो सकता है।

ऐसा कोई कार्य नहीं है, जिसे मनुष्य न कर सकता हो। यदि लक्ष्य की ओर बढ़ना है, तो दृढ़ निश्चय करना होगा। संकल्प पक्का हो, तो बड़ी से बड़ी बाधा दूर हो सकती है। किन्तु यह अवश्य

ध्यान रखना होगा कि किसी कार्य को आरम्भ करके बीच में हीन छोड़े। यदि कठिनाइयों और बाधाओं की चिन्ता किए बिना धैर्य पूर्वक बढ़ते गये, तो लक्ष्य दूर नहीं रहेगा। वस्तुतः यही कर्त्तव्य धर्म है।

जो व्यक्ति पुरुषार्थ करते हैं, उन्हीं को लक्ष्य की प्राप्ति होती है। संकल्पवान व्यक्ति निरन्तर प्रयासरत रहते हैं। वे गलतियाँ भी करते हैं, लेकिन उदाविग्न नहीं होते। कर्म करना ही उनका कार्य है।

❋❋❋

शेष पेज 12 **से आगे.....**

कराता है।

नीला रंग–यह रंग पश्चिम दिशा का स्वामी माना गया है नीले रंग का नीले रंग का प्रयोग व्यक्ति के मन को शान्ति देने वाला कहा गया हैं आँखों को अच्छा लगने वाला यह रंग शीतलता प्रदान करता है यह रंग भारतीय सेना में भी वीरता और शक्ति के रुप में स्वीकार किया है।

बैगनी रंग– यह रंग तर्क को अर्न्तज्ञान के साथ और अनुशासन को रचनात्मक कार्यो के साथ मिलता है यह धीरे–धीरे व्यक्ति के स्वभाव रचनात्मक शक्तियों का प्रतिनिधित्व करता है यह रंग भोजन के रुप में पाचन शक्ति में सहायक बनता है।

सन्तरी रंग– यह रंग आकर्षण का प्रतिनिधित्व करता है यह रंग व्यक्ति को रचनात्मक उदेश्य पूर्ति के लिये शक्ति पूर्वक उत्तेजित करता है यह व्यक्ति में अहंकार पैदा करता है इस रंग का अधिक प्रयोग व्यक्ति में बैचेनी का वातावरण बना देता है। यह रंग व्यक्ति के विचारों को अपनी रक्षा व दूसरों की रक्षा के लिये भी प्रेरित करता है।

काला रंग–यह रंग प्रकाश को अवशोषित करने वाला शोक और उदासी का प्रभाव देने वाला रंग है। भवन में प्रयुक्त काला व स्लेटी रंग व्यक्ति में निराशा व चिन्ता को दर्शाता है। जहाँ तक सम्भव है भवन में इस रंग का उपयोग नहीं करना चाहिये।

❋❋❋

शेष पेज 13 **से आगे.....**

तां देवीं प्रेष्याशु त्वं मद्गृहे ते नमो नमः।।

कमल का फूल, श्वेत दूर्वा, गूगगल, गौ–घृत इन सब चीजो को मिला कर लगातार 21 दिनों तक 1 माला जप करके हवन करें आपके घर कुबेर भगवान धन की वर्षा करेंगे।

दरिद्रता नाश व सर्व कार्य सिद्धि के लिए

ऊँ ऐं ह्री श्रीं सं सिद्धिदां साधय साधय स्वाहा।

श्रद्धा विश्वास से मन्त्र की नित्य 21 माला जप करे। ग्रहण के समय ५ तोले जटामासी २ तोले काली मिर्च, दूर्वा तथा घृत मिलाकर, मन्त्र का उच्चारण करते हुए अग्नि में १ माला से हवन करे फिर नित्य जप करते रहने से सभी प्रकार की सिद्धि होती है

दुःस्वप्न को सुखमय बनाने के लिए

ओं ह्रीं श्रीं क्लीं दुर्गातिनाशिन्ये महामयाये स्वाहा।
कल्पवृक्षेती लोकानां मन्त्र सप्त द्शाक्षरः।
शुचिश्च दशधा जप्तवा दुःस्वप्न सुखवान भवेत।।

इस मन्त्र को पवित्र होकर दस बार जप करने से दुःस्वप्न सुख देने लगते है मन्त्रो को उच्चारण शुद्ध व स्पष्ट होना चाहिए तथा मंत्रो को श्रद्धा विश्वास के साथ जपना चाहिए इससे अवस्य ही लाभ होता है।

❋❋❋

पता परिवर्तन की सूचना अवश्य दें

अक्सर भविष्य निर्णय द्वि-मासिक पत्रिका के सदस्य अपना भवन बदल लेते हैं, किन्तु पता परिवर्तन की सूचना नही देते जिसके कारण भविष्य निर्णय द्वि-मासिक पत्रिका पुराने पते पर ही भेजी जाती रहती है, किन्तु आपको नही मिलती। अतः पता परिवर्तन की सूचना कार्यालय पर फोन कर के दें। फोन न. 9719666777, (0562) 2856666, 2525262

आपकी वास्तु समस्या का समाधान

समस्या– मैं जब से अपने नये मकान में आया हूँ तब से बहुत परेशान हूँ। आय के सभी श्रोत समाप्त होते जा रहे हैं। समस्त जमा पूंजी बीमारियों में खर्च होती जा रही है। अपने मकान का नक्शा आपको प्रेषित कर रहा हूँ। उचित उपाय बतायें। **मृदुल देव**

समाधान– सबसे पहले तो आप यह समझ लें कि आपके उपर शनि की साढ़ेसाती चल रही है। अतः शनि की शान्ती के उचित उपाय यंत्र/मंत्र/दान/पूजा/व्रत के माध्यम से करें, जिससे आपकी मानसिक परेशानियां कम होना शुरू हों। मकान का नक्शा देखने पर ज्ञात हुआ कि आपके मकान में सीढ़ियां उत्तर–पूर्व दिशा में हैं। तथा आपने सीढ़ियों के नीचे स्टोर व बाथरूम भी बना रखा है जो गलत है। सम्भव हो तो बाथरूम का उपयोग करना बन्द करें। शीघ्र ही अच्छे रिजल्ट सामने आना शुरू हो जायेंगे तथा लाभ मिलने लगेगा।

समस्या– मेरे बच्चों का मन पढ़ाई में बिल्कुल नहीं लगता है। कृपया समस्या समाधान वास्तु उपाय द्वारा करें। **नानकचन्द**

समाधान– आपने अपने बच्चों को जो कमरा दिया हुआ है वह बिल्कुल ठीक है। आप उनसे कहें कि पढ़ते समय वह अपना मुंह पूर्व या उत्तर की ओर रखें। उनके पढ़ने की मेज पर लाईट ब्ल्यू कलर का मेजपोश बिछवायें। उनकी मेज पर छोटी सी माँ सरस्वती की तस्वीर तथा एक ऐजूकेशन टावर भी रखवायें। बच्चों के गले में सरस्वती यंत्र सिद्ध करवा कर धारण करवायें तथा सुबह शाम सरस्वती मंत्र का जाप करवायें। **पं. अजय दत्ता**

मो. 9319221203

पूजा के यंत्र-तंत्र-रुद्राक्ष सामिग्री

पूजा की सामिग्री

मालाऐं (रूद्राक्ष, स्फेटिक)

रूद्राक्ष माला
रूद्राक्ष माला (मध्यम)
रूद्राक्ष माला छोटे दाने
रूद्राक्ष- स्फटिक माला
स्फटिक माला छोटी
स्फटिक माला बड़ी
लाल चंदन माला, हल्दी की माला
कमल गट्टे की माला

स्फटिक सामग्री

स्फटिक श्री यंत्र
स्फटिक लक्ष्मी, स्फटिक गणेश
स्फटिक शिव लिंग
स्फटिक बॉल बड़ा
स्फटिक बॉल छोटी

मिश्रित सामिग्री

नवरत्न ब्रेसलेट
नवरत्न ब्रेसलेट (मध्यम)
नवरत्न अंगूठी
काले घोड़े की नाल असली
काले घोड़े की नाल का छल्ला
श्वेतार्क गणपति
इंद्रजाल, बृहमजाल
गोमती चक्र, नाभि चक्र

शंख

दक्षिणावर्ती शंख (स्पेशल)
दक्षिणावर्ती शंख मध्यम
गणेश शंख एवं लक्ष्मी शंख

सभी तरह के लॉकेट (चांदी में)

सिद्ध सर्वकार्य भौतिक सुख कवच
सिद्ध विघ्न विनाशक रक्षा कवच
सिद्ध महामृत्युंजय -शत्रु नाशक कवच
सिद्ध रत्नजडित कालसर्प लॉकेट
सिद्ध कालसर्प लॉकेट चांदी में
सिद्ध सरस्वती यंत्र-रक्षा कवच
सिद्ध श्री यंत्र-रक्षा कवच सहित
सिद्ध शत्रु नाशक-रक्षा कवच सहित
सिद्ध शत्रु नाशक-टोटके नाशक
सिद्ध टोटके नाशक-रक्षा कवच

रूद्राक्ष

सिद्धएकमुखी (गोल दाना)
सिद्धएकमुखी (काजू दाना)
सिद्ध तृतीय नेत्र रूद्राक्ष
सिद्ध गौरी शंकर रूद्राक्ष
सिद्ध गर्भ गौरी रूद्राक्ष
सिद्ध दो मुखी रूद्राक्ष
सिद्ध तीन मुखी रूद्राक्ष
सिद्ध चार मुखी रूद्राक्ष
सिद्ध पांच मुखी रूद्राक्ष
सिद्ध छः मुखी रूद्राक्ष
सिद्ध सात मुखी रूद्राक्ष
सिद्ध आठ मुखी रूद्राक्ष

पारद सामग्री

पारद शिव लिंग, पारद श्री यंत्र

पिरामिड

पिरामिड (पीतल)
पिरामिड छोटे (पीतल)
कार पिरामिड
स्टडी टेबल पिरामिड

तांत्रिक वस्तुयें

तांत्रिक नारियल
तांत्रिक पत्ता सुपाड़ी
गऊ लोचन
एकाक्षी नारियल

फेंगशुई

मेगनेट ब्रासलेट, समृद्धि पेड़
लाफिंग बुद्धा, क्रिसटल बॉल
ग्लोब, पिरामिड शुभ-लाभ
लुक, फुक, साहू
लवबर्ड, कछुआ
तीन टांग का मेंढ़क

भविष्य दर्शन के नाम से ड्राफ्ट या मनीआर्डर भेजकर प्राप्त कर सकते हैं। 500 रूपये या अधिक का सामान वी.पी. पी. द्वारा भी मंगा सकते हैं।

सभी प्रकार के सिद्ध यंत्र, सिद्ध तंत्र सामग्री, असली रत्न की अंगूठी, रुद्राक्ष, रत्न व स्फटिक मालायें आदि उपलब्ध करायी जाती हैं

भविष्य दर्शन®
ज्योतिष, वास्तु शिक्षण संस्थान

भगवती कॉम्प्लैक्स, शाह सिनेमा के सामने, आगरा फोन : 0562-2856666, 2525262